वीणा
भावों की अभिव्यक्ति
२००९

सार्थक मोहंती

प्रो० जी० रघुरामा
उप-निदेशक

25. 04. 2008

संदेश

मुझे बहुत खुशी है कि हिन्दी प्रेस क्लब अपने वार्षिक हिंदी संस्करण, वाणी-09 का प्रकाशन कर रही है। बिट्स के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों की लिखित कला को व्यक्त करने के लिए वाणी एक महत्वपूर्ण मंच है और साथ ही साथ बिट्स में होने वाली सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को लोगों तक पहुंचाने के काम को वाणी ने बखूबी निभाया है। आशा करता हूँ कि इस बार भी यह कायम रहेगा।

वाणी सम्पादक मंडल की मेहनत उल्लेखनीय है।

आशा करता हूँ की आप सभी की छुट्टियां अच्छी रहेंगी और अगले सेमेस्टर के लिए आप नए जोश के साथ लौटेंगे।

इस वर्ष बिट्स से स्नातक लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं से अनुरोध है की हमारे संपर्क में रहें और "यात्रा, श्रेष्ठता की" में हमारा हिस्सा बनें।

सभी बिट्सियन्स को मेरा नमस्कार।

जी० रघुरामा

सम्पादकीय

वाणी, आवाज़ हमारी, आवाज़ आपकी और आवाज़ बिट्स की | वाणी का यह संस्करण कुछ अलग है | ज़िन्दगी थमती नहीं है | हर दिन कुछ बदलता है और यही इस वाणी की आवाज़ भी है जो कि हर कोने में सुनाई देगी | एक बदलाव की, एक सकारात्मक बदलाव की |

हर वो काम जो बदलाव लाता है, इस पद्धति में, जो कि किसी भी बदलाव के बहाव को रोकने की कोशिश करती है, को मुश्किलें तो झेलनी ही पड़ती है | पर कहते हैं, ज़िन्दगी इसी का नाम है |

यह वाणी भी उस ज़िन्दगी का नाम है जिसमें मिर्ज़ा गालिब के सटीक, व्यंग्यात्मक और शोचनीय दोहे हैं, जिसमें आज के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर कुछ विचार हैं, जिसमें कलाकारों की सोच रेखाओं में उभरी है और जिसमें कवि की सोच शब्दों में |

इस वाणी के लिए हम उन सभी लोगों का धन्यवाद करना चाहते हैं जिनके अथक प्रयास और समर्पण के बगैर यह संभव नहीं था | बिट्स में और बिट्स से बाहर जिन लोगों ने वाणी मंडल का मार्दर्शन किया है, उनके हम बहुत आभारी हैं |

उन सभी लोगों का वाणी मंडल की तरफ से तहे दिल से शुक्रिया जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष, वाणी-09 में बहुमूल्य योगदान दिया है |

प्रतीक माहेश्वरी
पुष्प सौरभ

इस अंक में

लेख/कहानियाँ

बिखरे पन्ने.....3

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?.....6

ज़िन्दगी - ज़िन्दगी क्या कमी रह गयी 15

वर्तमान समय में सारगर्भित शिक्षा का अभाव.....18

सा विद्या या विमुक्तये.....23

विशेष

13.....कुलपति से मुलाकात

33.....मिर्ज़ा गालिब को श्रद्धांजलि

वार्षिक

बॉसम.....19

ओएसिस.....20

अपोजी.....21

इंटरफेस.....22

ब्लॉग

37..."हाय"-कहती सुख को बाय

38..बीबी साथ में फिर कैसा

39...........................ज़िन्दगी क्या जंग से कम है - लघुकथा

40..गिनती ज़िन्दगी की

41.................घासीराम मास्साब की ज़िन्दगी का एक दिन

कविताएँ

आम हिन्दुस्तानी...2

वो स्मरणीय दृश्य का एक क्षण......................................5

मैं मिलूँगी वहीं..10

जीने का आनन्द..17

जीवन की अभिलाषा...29

तेरी आँखों के समंदर में..31

आखिर क्यों 32

अब लड़ना होगा...45

पिलानी फिर भी दिल्ली से दूर है

10 महीने हो गए हैं, कैम्पस छोड़े हुए, पर यादें आज भी ताजा हैं | ऐसा लगता है मानो कल ही की बात तो थी | हॉस्टल की लाइफ, दोस्तों का साथ, ANC मैगी, रात-रात भर CS और AOE और भी ना जाने क्या-क्या.. कितना याद रख सकता है इंसान.. बस जी सकता है | पर अब वक़्त बदल गया है | किसी ने सच ही कहा है -

"वक़्त किसी के लिए नहीं रुकता |"

कैम्पस पर मैंने अपने दोस्तों के मुकाबले एक सेमेस्टर कम बिताया है | इस बात का अफ़सोस तो हमेशा ही मन में रहेगा, पर इंसान को आगे बढ़ने के लिए कल को तो छोड़ना ही होगा | पर बिट्स की ज़िन्दगी को भूलना इतना आसान नहीं है और शायद यही कारण है कि PS-2 के दौरान हर बिट्सियन एक बार तो कैम्पस ज़रूर आता है | उसके मन में यही विचार रहता होगा कि उन कुछ दोस्तों से मिल लिया जाए जिसके साथ उसने 3-4 साल बिताए हैं और जिनसे अब न जाने कब मुलाक़ात हो.. 4-5 साल या 10-15... कुछ भी नहीं पता |

मेरे ख्याल में जो मस्ती पहले साल के एच-विंग में होती थी वो कभी वापस नहीं आ सकती है

जब मैंने बिट्स छोड़ा था तो लग रहा था कि पिलानी कहाँ दिल्ली से दूर है ? जब मन करे बस में बैठो और पिलानी पहुँच जाओ || पर मैं गलत साबित होता जा रहा हूँ |
3 बार पिलानी आने के बाद अब मेरे भी विचार बदल रहे हैं | अब बहुत कम ही दोस्त कैम्पस पर रह गए हैं | एक सेमेस्टर पहले तक तो फिर भी काफी दोस्त थे पर इस सेम काफी कम ही हैं | और जो बचे हैं, या तो जॉब लगवाने में व्यस्त हैं या बोर हो कर घर जा चुके हैं |

अब वह ज़िन्दगी दूर-दूर तक नज़र नहीं आती जो हमने पिछले 2 सालों में बिताई थी | लोग कहते हैं कि सेंटी-सेम मस्ती के लिए होता है पर मेरे ख्याल में जो मस्ती पहले साल के एच-विंग में होती थी वो कभी वापस नहीं आ सकती है क्योंकि इस सेम में सब इधर-उधर बिखर चुके होते हैं और सबको अपनी-अपनी ज़िन्दगी में व्यस्त देखा जा सकता है | पहले साल में सब हमेशा साथ रहने वाले दोस्त, केवल लंच पर ही साथ रहते हैं क्योंकि नाश्ता तो शायद ही कभी हो पाता है [अब नाश्ते से 2 घंटे पहले ही तो सोते हैं] | रात का खाना C'not में होता है और बाकी दिनभर इधर उधर बाहर ही घूमते हैं |

इसलिए उम्मीद करता हूँ कि पहले और दूसरे साल में छात्र पूरी मस्ती में बिता रहे होंगे, तृतीय वर्ष अपने CDC को सही से निभा रहे होंगे और सेंटी-सेमाईट अपने 4-5 साल के यादों को घूम-घूम कर इकठ्ठा कर रहे होंगे और मेरे जैसे अलुम्नी काम के बीच वक़्त निकाल कर दोस्तों से संपर्क में रह रहे होंगे |
अगर ऐसा नहीं है तो बस एक बात कहूँगा - "यारों पिलानी दिल्ली से बहुत दूर है |"

अभिषेक राठी

अपनी गली में मुझको न कर दफ़न बाद-ए-क़त्ल
मेरे पते से खल्क़ को क्यूँ तेरा घर मिले

आम हिन्दुस्तानी

किचन में खड़ा सोचता हूँ,
"पानी में दूध" से उफन कर,
शीत हुई मलाई की "नैनो" लेयर,
क्या करहाती सड़कों की मरम्मत से,
मोटी होगी ?

पानी में दूध और सड़कों की मरम्मत
के अजीब संयोग के गणित में
मेरी क्या भूल ?
देखो - मुझसे सवाल मत पूछो
मुझे चैन से जीने दो |
इतना कह देता हूँ,
रिश्वत की मदिरा ज़रूर पिलाता हूँ,
पर खुद नहीं पीता |
सहनशील सज्जनता का
साक्षात अवतार हूँ मैं,
चाहे कितना भी अन्याय हो
बड़ों के मुंह नहीं लगता |

सोचता हूँ,
मैं आखिर क्या करता हूँ ?
रात होते ही चैन की नींद सोता हूँ ..
पर सुबह होते ही
हिंदुस्तान की चिंता करता हूँ |
भीड़ में खोया, कतार में फंसा,
दफ्तर मुश्किल से पहुँचता हूँ |
सरकार को 200 गालियाँ चढ़ाकर
प्रसाद
दिन, दोपहर से शुरू करता हूँ |
दिन अभी चढ़ा ना था,
संध्या की स्याही
खिड़कियों से चली आती है,
दफ्तर में दिनभर उलझनें
सुलझन से बतियाती हैं |

ज़िन्दगी यूँ ही
खुले-बिगड़े नल की तरह
नाली में बह जाती है |

सोचता हूँ,
ये विवशता क्या है ?
ये कैसी उलझन है ?
हिन्दोस्तां आखिर क्या है ?
क्या मैं हिन्दोस्तां हूँ ? मैं ?
शायद !
शायद इसलिए ? ...

सोना, सोना तब होता है
जब उसका हर अणु सोना होता है |

आज नहीं सोया मैं,
आने वाले कल के हसीन ख्यालों में |
जब -
सड़कों पर रेंगती ज़िन्दगी
हवा से बातें करेगी
सुबह दोपहर को नहीं होगी
शाम दफ्तर में जब दस्तक देगी
हिन्दोस्तां की सूरत संवर रही होगी |

हाँ, मैं हिन्दोस्तां हूँ |
सहनशील-सज्जनता नहीं
विवेकशील विद्रोह हूँ मैं |
अब कल को आना होगा
- आज ही |
निशा तुझे रुकना होगा
इस नयी सुबह के सूर्यास्त तक |

ऋषिकेश वैद्य

सहायक प्रोफ़ेसर

1

शायद ही कोई दिन हो जब मन को झकझोरने वाली कोई घटना न घटे | पिछले साल कुछ छात्रों के साथ प्रदेश के एक गाँव घूमने का मौका मिला | रास्ते में बातों ही बातों में मैंने उनसे पूछ डाला - "तुम लोग कहाँ के रहने वाले हो | गाँव के या शहर के ?" किसी ने गाँव की बात नहीं की | क्योंकि अधिकांश का जन्म व लालन-पालन शहर में ही हुआ था | हाँ, उनके दादा-दादी गाँव में ही रहते थे या रहते हैं | परन्तु उनको बचपन में एक-दो बार को छोड़ गाँव जाने की बात याद नहीं आती | समय कहाँ ? न ही माँ-बाप को समय है और न ही उनको पढ़ाई से छुट्टी | अब तो और समय मिलना मुश्किल क्योंकि आई.आई.टी. की तैयारी कोटा में सातवीं कक्षा से ही शुरू होने वाली है |

वापस आ रहा था | गाड़ी की अगली सीट पर मैं बैठा था और मेरे पीछे वही सब छात्र | बात हॉलीवुड से चलकर बॉलीवुड तक पहुँची और फिर रामायण और महाभारत के पात्रों तक जा रूकी | मैं चुपचाप सुनता रहा | आश्चर्य तो तब हुआ जब उन्होंने रामायण और महाभारत के साधारण से पात्रों पर भी लंबी परिचर्चा आरंभ कर दी | किस्सा यहाँ कहाँ ख़त्म हुआ | उन्होंने बॉलीवुड में बन रहे फिल्मों की अंतर्राष्ट्रीय पहचान तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों पर भी कई गंभीर सवाल उठाए | चर्चा में गर्मी तो तब आई जब छात्रों की टोली दो दलों में बँट गई | एक ने भारत में बनने वाली फिल्मों को भारतीय समाज का नकारात्मक चित्रण माना तो दूसरे ने इसे वास्तविकता उजागर करने वाला बताया | यही लगा कि काश | इन्हें समाज को थोड़ा और करीब से देखने का मौका मिला होता | संभव है, ये समाज को और बारीकी से समझ सकते | पर आशा की किरण दिखती गई जब उनके मन में कुछ करने की, जो समाज एवं देश के लिए सकारात्मक हो, बड़ी ही सशक्त अभिलाषा जगती दिखी |

लोगों ने मोरल पॉलिसिंग के नाम पर राम सेना तथा श्री मुथालिक जी को जी भर कर कोसा |

2

मंगलोर की पब वाली घटना पर बड़ी ही हाय तौबा मची | लोगों ने मोरल पॉलिसिंग के नाम पर राम सेना तथा श्री मुथालिक जी को जी भर कर कोसा ही नहीं बल्कि अभद्र भाषा के व्यवहार में प्रतियोगिता आरंभ कर दी | मुझे भी राम सेना तथा श्री मुथालिक के व्यव्हार अच्छा नहीं लगे | मीडिया ने भी, खासकर अंग्रेजी मीडिया ने इन्हें कहीं का नहीं छोडा | आश्चर्य तो तब हुआ जब तथाकथित प्रगतिवादी लोगों ने 'पिंक चड्डी' आन्दोलन आरम्भ कर दिया | अंग्रेजी मीडिया ने हर घंटे 'पिंक चड्डी' भेजने वालों की संख्या में बढ़ोतरी का सीधा

आरम्भ कर दिया | एक तरफ लोग मोरल पॉलिसिंग का जम कर विरोध कर रहे थे और दूसरी तरफ़ वही लोग 'पिंक चड्डी' भेज कर एक नए मोरल पॉलिसिंग की शुरुआत कर रहे थे | लगा, जैसे लोग विरोधाभास की ज़िन्दगी जीने में आनंद ले रहे हों | राज्य सरकारों के बीच भी कहीं मतैक्य(सामंजस्य) नहीं | महिलाओं में विरोध झलक रहा था | महिला आयोग की सदस्या बर्खास्त हो गयी क्योंकि इन्होंने मंत्रीजी के विचारों से अलग विचार व्यक्त कर दिए | अगर सहमति होती तो कोई राजनीति नहीं होती | विरोध किया तो राजनीति करने का आरोप लगा | संतोष इसी बात से है कि बॉयफ्रेंड के सिगरेट पीने से मना करने पर गर्लफ्रेंड द्वारा आत्महत्या की घटना पर कोई आन्दोलन नहीं हुआ अन्यथा बात का बतंगड़ तो इस पर भी हो सकता था |

3

आजकल गुस्सा तो मुझे भी आता है जब लोग मदर्स डे, फादर्स डे, वैलेंटाइंस आदि की बधाई देना शुरू कर देते हैं | गुस्सा इसलिए नहीं की बधाई देते हैं, बल्कि इसलिए की बधाई देने से पहले कुछ सोचते क्यों नहीं ? एक छात्र को अपने शिक्षक को 'हैप्पी वैलेंटाइंस डे' कहते सुना तो गुस्सा नहीं, हंसी आ गयी | हंसी ही मेरे लिए गुस्से की अभिव्यक्ति बन गयी है क्योंकि आजकल स्वतंत्रता जो है | कहीं मोरल पॉलिसिंग का अभियोग न चल जाये, चुप रहने में ही भलाई लगने लगी है | जिस समाज में माँ-बाप हर पल अपने बच्चों के लिए जीते हों, उसी समाज में आज वर्ष में मात्र एक दिन बच्चों को माँ-बाप के लिए एक कार्ड पर 'हैप्पी मदर्स/फादर डे' लिखते और भेजते देख हैरानी हो रही है | लेकिन इसमें हैरानी किस बात की ? समाज की उदासीनता तथा व्यक्तिवादी समाज के विकास का यही तो लक्ष्य था | समाजवादी व्यक्ति से व्यक्तिवादी समाज में परिवर्तन कुछ न कुछ असर दिखायेगा ज़रूर |

4

भारतीय राजनीति के बदलते तेवर भी कभी कभी हंसा देते हैं | तटस्थता के नाम पर लोग अपनी पृष्टभूमि एवं पहचान को ही भूलने लगे हैं | पिछले साल सोमनाथ बाबू ने कर्त्तव्य परायणता के नाम पर तथा तटस्थता को बहाना बना कर अपनी पार्टी को ही ठेंगा दिखा दिया | ज़िन्दगी भर समस्यावाद का फंडा ढोने वाले दादा ने पद के कारण अपनी पार्टी के संविधान तथा लाखों वोटरों, जिन्होंने उन्हें समस्यावादी समझा था, को दरकिनार कर दिया |

पांच साल तक सरकार में रहने वाली पार्टियां तथा इनके कोटे के मंत्री आज अपने ही कार्यों का विरोध करते हुए चुनाव लड़ रहे हैं | सब उपलब्धियों का सेहरा बांधे, नादानियों का ढींकरा दूसरे के सर फोड़ना चाहते हैं |

अगले पन्ने पर जारी ...

उनके देखे से जो आ जाती है मुंह पर रौनक
वो समझते हैं की बीमार का हाल अच्छा है

कौन है वह दूसरा | ज़रा आम आदमी भी तो जाने ? किसको मूर्ख बनाना चाहते हैं नेतागण इस सूचना के युग में ? विरोधी पार्टी सत्ता पक्ष की नाकामियों की चर्चा तो खूब कर रही है पर नयी राह की तलाश में बैठे मतदाताओं को केवल लम्बे चौड़े गतिरोधक ही दिख रहे हैं |सूचना एवं संचार के युग में लोगों को यन्त्र भले ही मिल गया हो ,पर सही सूचना की जगह अस्पष्ट भरोसों के सब्ज बाग़ ही दिखाए जा रहे हैं | लीड इंडिया का सन्देश केवल समाचार पत्र का विज्ञापन बन कर न रह जाये ,इसी अंदेशे के साथ वाणी के नए अंक की प्रतीक्षा रहेगी |

संजीव कुमार चौधरी

भाषा विभाग

वो स्मरणीय दृश्य का एक क्षण

एक महिला ,
सड़क के किनारे ,
कड़कडाती ठण्ड एवं कुहरे में ,
गोद में लिपटाए बच्ची को लेकर ,
बैठी थी मौन एवं शांत |

फटी पुरानी साड़ी के लिबास में ,
दुःख दर्द से पीड़ित लग रही थी |
मेरी आशा मेरी नजर उस पर पड़ी
मेरे प्रति उसके हृदय में अपनापन जागा |
वह मुझे दुःख भरी दास्ताँ सुनाने लगी |

मैं गरीब और अकेली बहन थी ,
शादी हुई एक धनवान इंसान से ,
वह मुझे अपनाने लगा ,
अपने हृदय में प्यार काफी जगाने लगा ,
हम दोनों एक दूसरे के प्यार में खो गए |
परन्तु एक दिन ऐसी विषैली हवा चली ,

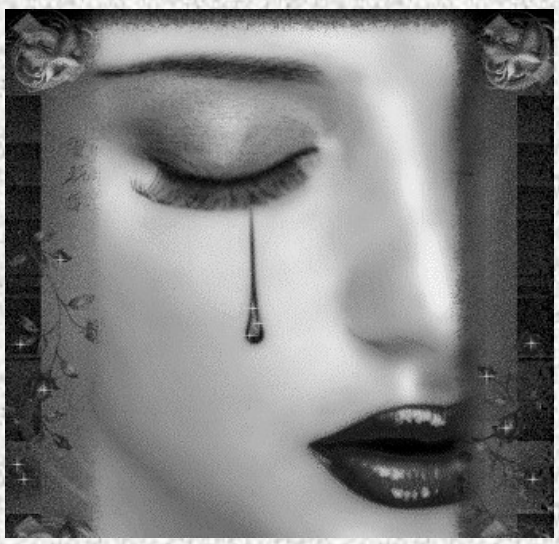

वो मुझे छोड़कर न जाने किस जहाँ में खो गया,
मैं अपनी बच्ची के साथ पित्त की भूख मिटाने को
आपके सामने बैठकर हाथ फैलाए मांग रही,
एक जीवन भर की खुशी |

मैं सुनकर कहानियों बहुत द्रवित हो गया ,
ईश्वर से प्रार्थना कर उसके जीवन दुःख को ,
दूर करने की चाह में खोता चला गया ,
और वो मुझे देखती रह गई |

बैदेही शंकर लाल

तेरी सूरत से किसी की नहीं मिलती सूरत
हम जहां में तेरी तस्वीर लिए फिरते हैं

क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

स्टील सिटी प्लस

पुलिस ने युवक को पकड़ा, नक्सलवादी होने का आरोप |

अप्रैल 9, 2002 : स्टील सिटी के सेक्टर चार थाना प्रभारी अंजनी कुमार सिंह ने एक विशेष ऑपरेशन के तहत सिटी बाज़ार में एक पच्चीस वर्षीय युवक रामगोविंद को कल रात धर दबोचा | कहा जा रहा है कि रामगोविंद जिले के उन पढ़े लिखे नौजवानों में से एक है जिनका काम ग्रामीण इलाकों में नक्सल विचारधारा का प्रचार करना है | युवक अपने आप को एक स्कूल शिक्षक बताता है जो विष्णुगढ़ तहसील के चिकसिया गाँव में काम करता है | कई बार पूछने पर भी उसने अपने शहर आने के मकसद का खुलासा नहीं किया है |

चौदह साल का संतोष अभी ही अपने स्कूल से आया था और पिताजी के कंधे के पीछे से झाँक कर अख़बार पढ़ रहा था |

"अरे पापा | यह तो वही वाले अंजनी अंकल हैं न जो इलेक्शन ड्यूटी के बाद पिछले महीने खाने पर घर आये थे | "

"हाँ! हाँ! " पिताजी ने एक शिकन भरे चेहरे से पीछे मुड़कर देखा ,"ये तुम क्या आदत डाल लिए हो? पेपर लेना था तो हमको बोल देते |"

ऐसा कहकर जगजीवन बाबू ने झट ही अख़बार से ' स्पोर्ट्स पेज' निकाल कर संतोष को थमा दिए | लड़के ने स्कोर देखा, पन्ने उल्टे पलटे, फिर अख़बार को वहीं बिस्तर पर रखकर बाहर आ गया | शायद किसी का भी इधर ख्याल ही नहीं गया | पापा ने आज खाते वक़्त कोई बात नहीं की, ऐसा लगा मानो कोई ज़रूरी काम छोड़कर आये हैं | अक्सर खाने की मेज़ पर आधा पौन घंटा तो चला ही जाता है - कभी देश दुनिया की बातें चलती हैं, तो कभी पड़ोसियों के किस्से | मगर आज छत पर लगे पंखे की चर्र-चर्र के आलावा किसी ने बोलने की तकलीफ नहीं उठाई | ताज्जुब की बात है , पापा ने आज अपने दोस्त अंजनी अंकल का ज़िक्र भी नहीं किया | आम तौर पर अगर पापा के किसी दोस्त का नाम अगर अख़बार में छपा तो अगले एकाध दिन तक डाइनिंग टेबल पर सिर्फ उसी की ज़िन्दगी से जुड़े प्रसंगों कि चर्चा होती है |

और ये रामगोविंद...| नाम कहीं सुना था ? संतोष को चीज़ें भूलने पर बड़ी झुंझलाहट होती थी | लोग भी कैसे कैसे नाम रख लेते हैं, नाम तो ऐसे रखने चाहियें कि दिमाग में उभर कर सामने आयें - किसी पुराण कथा से, किसी फिल्म से, कोई सा भी नाम जो दिमाग में एक तस्वीर खींच डाले | 'रामगोविन्द'! अजी किसी ने भी यह नाम सुना होगा - गल्ला बाज़ार में रामगोविंद स्टोर, मोहल्ले के चौक पर रामगोविंद नाई, कभी टैक्सी के पीछे, कभी रिक्शा खींचते हुए - नाम से ही भीड़ के एक गुमनाम चेहरे की छवि आती है | शा... यद , कुछ दिनों पहले उसने भी ऐसे ही, बे-दिलचस्प, मामूली इन्सान को देखा हो | जेहन में एक शख्स आता है - दुबला पतला, काला कलूटा, घुंघराले बालों वाला एक नौजवान चंद सप्ताह पहले अक्सर यहाँ आया जाया करता था |

अरे भाई, वही होगा रामगोविंद , संतोष ने अपनी रूठती हुई याददाश्त को समझाया | शहर का ये इलाका अँधेरे में डूबा हुआ था | छत के खुलेपन में मरती हुई हवा में एक चटाई के कोने पर कोई नौजवान, जिसे अब हम रामगोविंद मान रहे हैं, बैठा था |

खुसरौ दरया प्रेम का, उलटी वा की धार,
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार.

"बाबू, आप कहाँ पढ़ते हैं?' सहसा उसने संतोष के बड़े भाई आकाश को टोका |

"अभी हम इंटर पास किये हैं | मेडिकल की तैयारी कर रहे हैं |"

"जब आप डॉक्टर बनिएगा न तो हमारे गाँव ज़रूर आइयेगा| हमारे यहाँ डॉक्टर को बहुत इज्ज़त देते हैं |"

"लेकिन तुम..तुम तो 'नक्सल एरिया' में रहते हो | वहां कौन जायेगा ? कल ही एक बस को उड़ा दिया पुरुलिया में | पेपर में बस उस सब इलाके से मडर की ही न्यूज़ आती है |"

"आप पेपर में लिखी हर बात में विश्वास करते हैं क्या ?"

'दिलचस्प इंसान है, विद्रोही किस्म के लोग ऐसी जगहों पर मुट्ठियों में मिलते हैं जहाँ सरकार देशद्रोहियों से लड़ रही होती है |' आकाश ने सोचा |

"तुम घर क्यों नहीं गए आज?" संतोष ने तनी हुई खामोशी को तोड़ने की कोशिश की |

"आज लेट हो गया | विष्णुगढ़ 100 किलोमीटर दूर है | ट्रेन लेना पड़ता है चास रोड के लिए और वहां से ट्रेकर | फिर पैदल 15 किलोमीटर | रात के समय चोर उचक्का घूमता है |"

"तुम तो शिक्षक हो न, फिर क्यों पढ़ रहे हो?"

"हाँ मालिक, बी.ए. पास तो हम भी हैं पर आपके तरह बड़े स्कूल नहीं गया | आजकल गाँव के स्कूल में पढ़कर पोसाई थोड़े ही पड़ता है | माँ बाप के पास पैसा ही नहीं है तो बच्चा लोग का फीस कौन देगा ?"

"आगे क्या प्लान है?"

"आपके यहाँ IGNOU का सेन्टर है | मुर्गी पालन में डिप्लोमा का फार्म भरा है | अभी अगले इतवार को परीक्षा है, फिर पैसा जमा करेगा |'

"वो तो तुमको बैंक लोन वगैरह मिल जायेगा |"

"कहाँ से मिलेगा? न जमीन न जथार, सब जमीन जो था वो ठेकेदार लोग सहायक स्टील यूनिट खोलने के लिए खरीद लिया | दिया पचास हज़ार रुपया, आज उसका कीमत दस लाख से कम नहीं होगा | घर के पीछे जो बचा है उसी में मुर्गी बतख पालेंगे |"

"वो पैसा तो बर्बाद कर दिए होगे तुम लोग? "

"नहीं बाबू | आपके जैसे बैंक में तो नहीं रखा, पर भाई दोनों को दिल्ली भेजा, पैसा देकर | पिछले सावन डेंगू से मर गया, दूसरे का कोई पता नहीं है | घर में बूढ़ा-बूढ़ी है, छोड़ के किधर जायेगा | "

मेरा बाबू मर गया तो जमीन हड़पने के लिए माँ को डायन बोलके जला देगा

"तो कहाँ से पैसा जुटाओगे?"

"अरे, कुछ लोग को यहाँ जानता है | देखते हैं , बीस पच्चीस भी मिल गया तो खींच लेगा |"

"कारोबार छोड़ो, तुम भी दिल्ली बम्बई जाकर नौकरी कर लो | "

"वहां क्या कोई सोना बरसता है? कल कोई पुलिस उठा लेगा क्रिमिनल समझ के | मेरा बाबू मर गया तो जमीन हड़पने के लिए माँ को डायन बोलके जला देगा |"

"मुर्गी पाल के घर चला लोगे ?"

"हौसला है, बाबू | चार और लड़का को सिखाकर अच्छा कारोबार जमा लेगा | आपके जैसा सब कुछ नहीं है अपने पास, बस सब माथे का लिखा है | दूसरे का छीनने से अच्छा है, अपना बनाना | किसी को हमसे ज्यादा मिला, समाज में बराबरी नहीं है , सरकार अमीर का पच्छ

लेता है, सब भाग का खेल है | हम उसके लिए बन्दूक काहे उठाएगा ?"

तभी बिजली आ गयी |

"चलो | बेस्ट ऑफ़ लक |" कह के आकाश नीचे चला गया |

अगले कुछ हफ्तों तक रामगोविन्द इसी तरह शाम को घर आता रहा | कभी फार्म भरने, कभी परीक्षा देने, तो कभी कारोबार के लिए पैसे इकट्ठे करने | छत पर ही खाता और ऊपर ही टीन वाली कोठरी में सो जाता |

समाज के अधिक जानकार लोगों की ज़बानें चलने लगीं | "अरे साहब ! किसको घर में रख रहे हैं? क्या जाने लड़का क्या निकले ? पुलिस ऐसे हुलिए वाले लड़के को खोज रही है, फालतू काहे झंझट में पड़िएगा ?"

फाइनल परीक्षा के दिन, शाम को जब वो इधर आया तो चाय पीकर उठा और कहा, "बाबूजी, आज फोर में एक परिचित के यहाँ जाना है, शादी है वहां |"

संतोष ने कभी ये जानने की कोशिश नहीं की कि रामगोविंद नक्सली था या नहीं | जिस आदमी को वह जानता था, उसके लिए छीनना और बनाना परस्पर विरोधी क्रियाएं थीं | अपनी गरीबी की कड़वाहट को भाग्य की घुट्टी समझकर पीने वाले उस लड़के को भरोसा था की प्रगतिशील 'शाईनिंग इंडिया' जिसके बारे में उसने अख़बारों में पढ़ रखा था , में कोई एक दरवाज़ा उसके लिए खुला होगा |

समाज में पहचान बनाने की ललक थी उसमें, पर हिंदुस्तान में इंसान की पहचान का अर्थ सिर्फ ये नहीं होता कि वो कौन है, बल्कि वो क्या है ? कहाँ से है ? शायद उसकी छाती पर लटके ये बदनाम मैडल उसकी कामयाबी के लिए नासूर बन गए | 'छीनना' और 'बनाना' ये सब तो झांसे देने के लिए बनाये गए शब्द हैं | मतलब तो नतीजे से था - कामयाबी से, वैभव से | किसी के तरीके को समाज की अनुमति मिली, तो उसे 'निर्माण' कहा , 'मिडल क्लास इन्नोवेशन' कहा | जो ज़रा भी लीक से हटे, वो सारे छीनने वाले माने गए | आखिर पेपर में पूरा सच थोड़े ही छपता है ?

शैलेश झा

एक सत्य घटना पर आधारित

प्रेम शंकर

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय |
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतू आए फल होय ||

वक्त

लोग कहते हैं कि वक़्त के साथ
हर घाव भर जाता है।
पर सच तो यह है कि, उन घावों को
वक़्त ही लाता है।

हमने महसूस किया है
वक़्त बदलाव लाता है।
सच ही है कि वक़्त के साथ
हर (सब) कुछ बदल जाता है।

इंसान अपने अन्दर का
माहौल नहीं समझ पाता है।
पर लोगों को यह बदलाव
अनोखे अनुभव दिलाता है।

ये वक़्त ही तो पुरानी यादों से मिलाता है
रोने के अनेक वजहों को साथ ले आता है।
फिर क्षण से हर दुःख को ख़ुशी बनाता है
वक़्त का यह खेल मुझे समझ नहीं आता है।

अनिरबन पाल

बादल

जाने वो कैसे बादल थे
घुमड़-घुमड़ जो आये
लेकिन बरस नहीं पाए थे

प्यासी धरती राह निहारे
कब बूंदा बांदी होगी
खेतों में लहराएगी फसलें
फिर से खुशहाली आएगी
हर नज़र एक आशा से देखे
अबकी बरसेगा पानी
लेकिन बरस नहीं पाया पानी

क्षणभंगुर सी थी जो खुशहाली
वापस लायी आखों में पानी
बादल तो न बरसा
पर बरस गए हर आखों से पानी
बंजर धरती तपती रह गयी
आश की डोर टूटती रह गयी
जाने वो कैसे बादल थे
घुमड़-घुमड़ जो आये
लेकिन बरस नहीं पाए थे

श्रीमती रश्मि सिंह

मैं मिलूँगी वहीं

देखना कभी बचपन को, बारिश के साये में खिलखिलाते हुए,
मैं मिलूँगी वहीं, पानी में काग़ज़ की नाव बहाते हुए।

दूर समुद्र की लहरों में तैरता हुआ जैसे कोई जहाज़ हो,
मैं मिलूँगी वहीं, सागर की अथाह गहराई को निहारते हुए।

कभी उठे जो नज़रें आकाश की ओर, देखना तारों की झिलमिलाहट को ,
मैं मिलूँगी वहीं, उस तारामंडल में, निर्वात से बातें करते हुए।

सुनना कभी वृक्षों की सरसराहट को, उन्हीं पत्तों के बीच
मैं मिलूँगी वहीं, उस शून्यता में भी किसी नये अर्थ को तलाशते हुए।

मरूभूमि में कभी थक जाए जो कदम, देख लेना बस एक बार ,
मैं मिलूँगी वहीं, अपने ही साये से बतियाते हुए ।

इस दुनिया से भले ही दूर चली जाओ, बस आँखें बंद कर लेना
मैं मिलूँगी वहीं तुम्हारी यादों में मुस्कुराते हुए।

हिना जैन

मेरे अधिकार

शाम की खामोशी,
समन्दर का किनारा,
लहरों का चक्रव्यूह,
और चक्रव्यूह सी ज़िन्दगी।

थके हुए पंखों संग सारा आकाश,
जाने कहाँ गए वो सारे एहसास,
लहरों से आती समपदी की आवाज़
तस्वीरों से तैरते वो रस्मो-रिवाज़।

अरण्य की चाह में दरख्त खोता गया...
समेटने की चाह में फासले बनते गए..
पर प्राणदीप और ये वक़्त
ला खड़ा करता है
मुझे उम्र के उस मोड़ पर
जहां सिर्फ मैं हूँ
और मेरे अधिकार।

निहारिका सिंह
सीनियर रिसर्च फेल्लो

संघर्ष

"कत्तअ जाई के ऐछ बौआ?" सन्नाटे को चीरती हुई एक कंपकपाती आवाज़ मेरे बाजू से निकली और मैं किसी सपने की गुदगुदाहट से बाहर आकर वास्तविकता की धरातल पर आ गिरा | पूस की बर्फीली रात, चारों तरफ सन्नाटा, गहरा धुंध और भयंकर अँधेरा | कहीं बहुत दूर स्टेशन मास्टर के कमरे के बाहर लालटेन की छोटी सी लौ, यूं मानो उस अन्धकार के दैत्य से अपने अस्तित्व की रक्षा करता हुआ नन्हा बालक |

सर्दी की छुट्टियां शुरू हो चुकी थी | दोस्तों से विदा लेते-लेते कब शाम के सात बज गए, पता ही नहीं चला | मुजफ्फरपुर के लिए आखिरी ट्रेन 6:30 बजे निकल चुकी थी | तब तक मेरे पास अपने सपनों की दुनिया में खो जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था |

इस वीराने में एक वृद्ध व्यक्ति को मेरे पास बैठे देख मैं विस्मित हो गया |"कहाँ जाना है बेटे ", उसने फिर पूछा | लम्बी उबास लेते हुए मैंने उसे अनदेखा करने का प्रयास किया | "मुजफ्फरपुर" क्रोध और झुन्झुलाहट के साथ मैंने उसके तीसरे और एक प्रश्न का उत्तर दिया |

"मुझे भी अपनी बेटी अंजू से मिलने ढ़ोली जाना है, अगली ट्रेन कब है?" उसने पूछा | "साढ़े नौ बजे" एक बार फिर मेरा वैसा ही रवैया था | उस वृद्ध व्यक्ति का चेहरा कुछ यूं उतर गया जैसे कोई बल्लेबाज अपने शतक के नज़दीक पहुँच कर आउट हो गया हो | शायद यही सोचकर मैंने अपना विचार बदला और उत्साहित होकर (मात्र एक प्रयास) पूछा ,"क्यों जा रहे हो अपनी बेटी से मिलने ,कोई ख़ास वजह ?"

"हाँ, मेरा नाती हुआ है | उसके लिए ये सब ले जा रहा हूँ और बेटी, पाहुन के लिए ये" दो पोटली खोलते हुए उसने कहा | उस पोटली के अन्दर मिटटी की गुड़िया और खिलौने थे | कुछ मिस्री भी थी | दूसरी पोटली में पीली रंग की एक साड़ी और एक लंबा कोट | "पाहुन का दावा का दूकान है, ये उनके लिए है |" उसके स्वर में गर्व और सम्मान की गर्माहट थी जैसे उसने कारगिल युद्ध स्वयं अपने बल पर जीत लिया हो |

"इसमें तो बहुत पूँजी लगी होगी?" अपनेपन की सीढ़ी बढ़ाते हुए मैंने पूछा |" दस हज़ार, सेठ से उधार लिया है दस टेक के हिसाब से | अगली बार जब फसल होगी तो पाई-पाई चुकता कर दूंगा |" गंभीर होकर उसने कहा |

"क्यों? उधार क्यों लिया वो भी इतने ऊंचे ब्याज पर?" मेरा पूछना स्वाभाविक था |

"क्या बताऊँ बेटा, इस बार की बाढ़ ने बचा-कुचा खेत भी तबाह कर दिया | अब रीति रिवाज़ तो निभाना ही पड़ता है, भले वो बेटी की शादी हो या पत्नी की मौत | अब बेटों को बाहर पढ़ने के लिए भेजा था तो उसका कर्जा भी चुकाना पड़ेगा |" कुछ उदासी उसकी आवाज़ में थी पर पश्चाताप या दुःख का कोई भाव नहीं था |

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर |
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ||

"आपके बेटे कहाँ हैं ? क्या वे नहीं आ रहे हैं ?" सहानुभूति के मरहम से उसके दुःख को ढकने का मैंने एक छोटा प्रयास किया | "नहीं, परदेस मैं पढ़कर तीनों परदेसी हो गए | दिल्ली, बम्बई मैं रहते हैं | छोटा कभी-कभी आता है, जानने के लिए कि मैं ज़िंदा हूँ या मर गया ताकि जो मकान और कुछ ज़मीन है उसको बेचकर चला जाए |" वृद्ध ने कहा |

"आपकी उम्र क्या होगी ?" मेरे इस परिस्थिति की तारतम्यता को भंग किया | "क्या ?" हकबकाते हुए उसने पूछा | "उम्र" मैं गंभीर था | "63 की बाढ़ में मैं गोद में था | ऐसा मेरी माँ कहती है |" उसने कहा | तकरीबन 40 साल, मैंने अनुमान लगाया | पर उसकी हालत देखने से लग रही थी मानो वह कब्र में पैर डाल कर बैठा हो | आँखें गहरे कुँए की तरह, सर पर कुछ उजले बाल, दोनों हाथों के पंजे तवे की तरह काले और सख्त, गले और हाथों में नसें बाहर झलक रहीं थी | एक फटी हुई धोती और कुर्ता | यूं मानो जैसे सिपाहियों ने निशाने पर गोलाबारी की हो और उसके ऊपर काली फटी चादर कुछ इस तरह से बाहर निकली थी जैसे एक भूखा शेर पिंजरे की सलाखों में अपनी गिरफ्त को शिकस्त दे रहा हो | यूं कहा जाए तो वह एक नरकंकाल लग रहा था जिसे यदि किसी खेत में रख दें तो कोई पक्षी 100 मील की दूरी से ही भाग खड़ा हो | उसकी जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर मैंने अनुमान लगा लिया की वह जीवन के किन-किन कठिन परिस्थितियों से गुज़र चूका है |

"इन सब चीज़ों के बावजूद आप अपना गुज़ारा कैसे करते हैं?" शायद अब मैंने उससे सही प्रश्न पुछा |

"आजकल सेठ के यहाँ हल्दी की बोरियां भरता हूँ | वहीं दो वक़्त का खाना नसीब हो जाता है | एक बार सरकार की 'ग्रामीण किसान योजना' की रकम पहुँच जाए, फिर हर दिन होली और रात दिवाली होगी |" उसने गंभीरता के गहरी रंग को हंसी के फव्वारे से हल्का करने का प्रयास किया | और फिर उसने अपने जीवन के संघर्ष का बड़ी सरलता से विवरण दिया | उसकी बातों में मैंने उसकी कठिनाइयों का अनुभव किया | भूखे पेट सोने का दर्द, अपमानित होने की आह और अकेलेपन का सन्नाटा |

कुछ इस तरह हमारा छोटा सा सफ़र साथ गुज़रा | घर पहुंचकर मैं उसके बारे में ही सोचता रहा | कईयों ने मेरा हाल-चाल पूछा और मेरे हाव भाव से विभिन्न तरह के अनुमान लगाए | पर मैं तो सिर्फ उस व्यक्ति के बारे में ही सोचता रह गया | हालांकि उसने कितनी ही कठिनाइयाँ अभी झेल ली हैं और ना जाने कितनी ही अभी बाकी हैं, पर उसके आँखों की चमक साफ़-साफ़ कहती है कि कितने भी बुरे हालात आ जाएँ, वह कभी हार नहीं मानेगा और जब तक परिस्थितियों को ना बदल दे वो करता रहेगा ..."संघर्ष"

विकास रंजन

तेरी तारीफ़ में सुखन[शब्द] कम पड़ गए,
वरना हम भी गालिब से कुछ कम ना थे...

एक मुलाकात... कुलपति से

हमने पहले उन्हें कितनी ही दफा सुना है - कभी ओएसिस के उदघाटन पर , कभी किसी क्लब के वर्कशॉप के अवसर पर| इन मौकों पर आपके सन्देश औपचारिक से ही होते हैं , बातें आपकी सोच की सतह को तो छूती हैं , मगर कभी समय या अवसर की सीमा का ध्यान रखते हुए गहराई में उतरने का मौका नहीं मिलता | प्रो. एल के माहेश्वरी और श्री लक्ष्मीकांत माहेश्वरी के बीच कितने ही पहलू छिपे हुए हैं - कई ऐसे किरदार जिनकी चर्चा अब एक कुलपति के जीवन के कोलाहल में दब सी गयी है |

कई भूमिकाओं में आपने बिट्स को अपना सर्वस्व दिया है - एक छात्र , एक वैज्ञानिक , शिक्षाविद् , अध्यापक , समाज सुधारक .... इस फेहरिस्त का कोई अंत नहीं है | 'वाणी' की ओर से यह प्रयास है उन अनदेखे मगर उतने ही महत्त्वपूर्ण किरदारों को जानने का जो प्रो.माहेश्वरी ने पिछले 35 वर्षों में निभाए हैं |

छात्र जीवन :

मैं पिलानी सन 1965 में इलेक्ट्रानिक्स में एम.एस.सी.(टेक) की डिग्री लेने आया था | हम तब अशोक भवन में रहते थे | यहाँ का माहौल खुली और नयी सोच तथा कड़ी मेहनत की ओर केन्द्रित था | हमें सप्ताह में 35 घंटे कक्षाएं लगानी पड़ती थीं | कई मित्र बने , जिनसे आज भी संपर्क में हूँ | उन दिनों में आई .आई. टी. कानपुर में एनालॉग कंप्यूटिंग से सम्बंधित एक परियोजना लेकर गया था जिसकी काफी तारीफ हुई थी | राणा प्रताप -अशोक मेस का खाना तब लाजवाब माना जाता था |

सन 67 में मैंने पी .एच. डी. के लिए दाखिला लिया और 71 में सेमिकंडक्टर इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में सफलतापूर्वक पूरा किया | इसी कारण मुझे आर. ई. सी. त्रिची में प्राध्यापक के पद का प्रस्ताव भी आया |

शिक्षा में करियर :

पहले मैं एक शिक्षक बनने के लिए अधिक प्रेरित नहीं था | यह निश्चय नहीं किया था कि आगे क्या करना है | फिर जब पी .एच. डी. के दौरान विद्यार्थियों को कभी कभार पढ़ाना शुरू किया तो कुछ रूचि जगी | खासकर युवा विद्यार्थियों से मिलना और बातें करना पसंद आने लगा |

इलेक्ट्रानिक्स में शोध के नए आयाम :

इलेक्ट्रानिक्स तेज़ गति से विकसित हो रहा है | मूलभूत सिद्धांत फिर भी सनातन रहेंगे , तो इसीलिए मैं छात्रों को इन्हें मज़बूत रखने के लिए कहता हूँ | नानो-विज्ञान जल्द ही शोध का नया केंद्र बनेगा और बायोकम्प्यूटिंग और बायोइंजीनियरिंग जैसी विधाओं का जन्म होगा | हम सभी को समय के साथ इन रुझानों को समझना और सीखते रहना चाहिए |

इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों का एम .बी. ए. के प्रति झुकाव :

मेरा मानना है कि युवा इंजीनियरों को एक दो वर्ष किसी तकनीकी कंपनी में कार्य अनुभव लेकर ही मैनेजमेंट की ओर जाना चाहिए | कुछ लोगों में प्रबंधन की प्रतिभा कम उम्र से ही होती , ऐसे लोग ही शायद सीधे कॉलेज से एम. बी.ए. दाखिला लेकर आगे बढ़ सकते हैं | आज विश्व के शीर्ष मैनेजमेंट संस्थान में प्रवेश पाने के लिए काम का तजुर्बा होना अनिवार्य है |

बढ़ते हुए विश्वविद्यालय और गुणवत्ता की कमी :

देश में शिक्षा का फैलाव तो हो रहा है लेकिन गुणवत्ता इस गति से तालमेल नहीं बैठा पा रही | इस ढांचे को पूरी तरह से बदल डालना ज़रूरी है |

आप देश में 200 विश्वविद्यालयों को चुनिए और इन्हें शीर्ष संस्थान बनाइये | छोटे और नए संस्थानों को इनकी निगरानी में रखकर इन विश्वविद्यालयों की खूबियों को अपनाने और मापदंड स्थापित करने को कहिये | इसे मैं नेटवर्क मॉडल कहता हूँ |

जब देश में शिक्षा के ज़रूरतमंदों की तादाद दिन-ब-दिन बढ़ रही है, तो हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकते |

तकनीकी साधनों का सही इस्तेमाल करें, प्रसारित लेक्चर हों, छोटी कार्यशालाएं हों | आज तकनीक इतनी प्रगति कर चुकी है कि मैं जैसे आपसे सामने संवाद कर रहा हूँ , वैसे ही मीलों दूर किसी छात्र से कर सकता हूँ| मगर ये शीर्ष संस्थान दया दान पर नहीं चल सकते, इसलिए सरकार को इस मुहिम की अगवाई करनी होगी, पैसे उपलब्ध कराने होंगे | अच्छी प्रथाओं का अनुपालन करवाना पड़ेगा और इन छोटे संस्थानों पर नज़र इस ढांचे से बेहतर तरीके से रखी जा सकती है |

आज ए.आई.सी.टी.ई जैसी सरकारी संस्थाएं मात्र निरीक्षण का कार्य कर रही हैं जहाँ हथेली गरम करने का रिवाज़ भीतर तक पनप गया है | विकेंद्रीकृत ढांचे में एक नैतिक और कानूनी ज़िम्मेदारी भी रहेगी |

दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रमों के विषय में विचार :

आज दूरवर्ती पाठ्यक्रम मात्र करेस्पोंडेंस कोर्स की परिभाषा से आगे बढ़ चुके हैं | बिट्स एवं अन्य कई संस्थानों ने आधुनिकीकरण और तकनीकी बदलाव लाकर पाठ्यक्रम को और भी संपूर्ण बनाया है |

जीवन में शिक्षकों का प्रभाव :

डॉक्टर एम चौधरी हमारे समय में E.E.E के विभागाध्यक्ष हुआ करते थे | अपने विषय में ही नहीं अपितु छात्रों से मधुर रूप से पेश आने में वे दक्ष थे |

अभिरुचियाँ :

अध्यात्म में मेरी पुरानी दिलचस्पी रही है | न सिर्फ रीति रिवाजों में , बल्कि जीवन के अर्थ की खोज में भी | लोग इसे कई प्रकार से करते हैं - धर्मग्रन्थ पढ़कर, मंत्रोच्चार से या समाज सेवा से |

मुझे युवाओं को प्रेरित करना भी अच्छा लगता है | मेरा मानना है कि अध्यात्म से संसर्ग से आप अपने अन्दर की कमजोरियां घटा सकते हैं |

"जो कहो वही करो , और जो करो वही कहो" ये मेरे जीवन का आदर्श वाक्य है |

ज़िन्दगी.....ज़िन्दगी क्या कमी रह गयी ??

"संजीव, चलो दो मिनट तुमसे कुछ बात करनी है", ये बोल कर मेरा मैनेजेर मुझे एच.आर. के कक्ष में ले गया | मुझे लगा कि कुछ तो समस्या है | वहां अन्दर जाने के बाद मेरे मैनेजेर ने कहा, "तुम्हें तो पता ही है कि हमारे सीईओ ने कहा है - 10% जॉब कट होना है, उसके कारण तुम्हें जॉब से निकाला जा रहा है |"

ये सुनते ही लगा कि पैरों तले ज़मीन निकल गयी | मेरा दिमाग सुन्न हो गया | कुछ समझ नहीं आया कि ये क्या हो रहा है ! फिर एच.आर ने कहा, "ये हमारे लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है, पर हमें ऐसा करना पड़ रहा है | आदेश ऊपर से आता है और हमें उसका पालन करना पड़ता है |"

10% जॉब कट होना है, उसके कारण तुम्हे जॉब से निकाला जा रहा है

मैंने अपने मैनेजर से पूछा, "सर, क्या मेरा परफॉर्मेंस ख़राब था ? क्योंकि सीईओ ने कहा था कि परफॉर्मेंस-लेवेल में नीचे से 10% लोगों की छटनी होगी |" एच.आर. ने कहा, "ऐसा नहीं है, कंपनी में कुछ 'व्यापार पुनर्गठन' हो रहा है और उसके कारण तुम पर असर हुआ है |" मेरे मेनेजर ने कहा, "तुम्हारा परफॉर्मेंस हमेशा ही अच्छा रहा है | तुम्हारे पी.एस. के परफॉर्मेंस पर हमने तुम्हें जॉब दिया था | तुम एक अच्छे संस्थान से भी हो | अच्छी शैक्षिक पृष्ठभूमि है | तुम्हें जरुर अच्छी जॉब मिल जायेगी |"

मेरे पास और न कोई प्रश्न था और न कोई जवाब सुनने की शक्ति | उन्होंने मुझसे कंपनी का आई.डी. कार्ड उसी समय ले लिया और कहा - "इस्तीफा दो वरना हमें निकालना पड़ेगा |" मैंने इस्तीफा देना सही समझा | उसके बाद अपना सारा सामान अपने कक्ष से उठाया और अपने कमरे पर वापस आ गया | जाते-जाते अपने एक सहकर्मी (जिसके साथ ज्यादा समय रहता था) को बोला, "भाई, जिस चीज़ का हमें डर था, वो हो गया | मुझे जॉब से निकाल दिया गया |"

डिंग-डोंग ..... "अबे तू वापस घर आ गया ? " मेरे रूममेट ने बोला .

"भाई, जिस चीज़ की आशंका थी, वो हो गया | मैंने तेरे को परसों ही बोला था कि मेरे को जॉब से निकाल देंगे ये लोग" | मैंने कहा | मुझे दो दिन पहले ही आभास हो चुका था कि मेरे साथ ऐसा होगा और मैंने अपने रूममेट को ऑफिस जाने से पहले बोला था, "यार, अगर इन लोगों ने मुझे निकाला तो मैं फिर ये कॉरपोरेट क्षेत्र में वापस नहीं आऊंगा |"

कभी-कभी मेरे साथ ऐसा हुआ है कि जब भी कोई बड़ी घटना मेरे जिंदगी में घटने वाली होती है, उसका आभास मुझे हो जाता है | चाहे वो मेरे पिताजी का देहांत हो या 12वीं में बोर्ड में अव्वल आना या अब अपनी जॉब खोना |

उसके बाद मैंने रोने की बहुत कोशिश की पर रो भी नहीं पाया | किस चीज़ के लिए रोता ? मेरी कोई गलती ही नहीं थी | मेरा परफॉर्मेंस ख़राब था ही नहीं ना ही मैं निष्क्रिय बैठा हुआ था | फिर किस आधार पर मुझे जॉब से

निकाला गया ? शायद मेरे मैनेजेर की मुझसे उतनी अच्छी पहचान नहीं थी ? या कुछ और ? मेरे से ख़राब प्रदर्शन करने वाले और सुस्त रहने वाले लोगों के साथ कुछ नहीं हुआ ? कंपनी के परफॉर्मेंस मापने वाले किसी स्केल में मैं निम्न 10% में नहीं होता | फिर मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ ? मेरे दिमाग के सागर में ये सवाल गोता मार रहे थे | पर जवाब न मिलने के कारण वो और भी व्याकुल हो रहे थे |

शाम में जब पता चला कि मेरी टीम में एक और बन्दे के साथ ऐसा हुआ है तो मन और व्याकुल हो गया | वो मेरे से ज्यादा अनुभवी, मुझसे ज्यादा समर्पित और प्रतिभाशाली था | मैंने सोचा जब उसके साथ ऐसा हो सकता है तो मैं किस खेत की मूली हूँ ?

अगले 3-4 दिन मैंने कैसे काटे ये शायद और कोई नहीं जान सकता है | अपने दोस्तों से बात करता, सामान्य रहने की कोशिश करता पर हो नहीं पाता | चाहे फिल्में देखने जाऊँ या बैडमिन्टन खेलने, हर पल दिमाग में वही चलता रहता | मेरी कंपनी की यादें | किस तरह मैंने पी.एस. किया यहाँ, साथियों के साथ मस्ती की, पी.एस. के अंत में मैंने कैसे जॉब लगाई , कैम्पस के नौकरियों की परवाह किये बगैर वापस इसी कंपनी में आया, काफी लोगों से संपर्क बनाये, कुछ अच्छे दोस्त बने, कुछ लोगों से नफरत बढ़ी | कभी काम अच्छा लगता, कभी बुरा, चीन की यादें, वहां की मस्ती, काम करने का मज़ा, चीन के लोग और उनकी टूटी-फूटी अंग्रेजी से काम चलाना, टीटी खेलना अच्छे से सीखना | कैंटीन के खाने को गाली देते हुए खाना, रोज़ चाय पीते समय अपनी कुंठा निकालना, मैनेजमेंट को गालियाँ देना, जिम जाना, जिम आने वाले लोगों से दोस्ती, शुक्रवार तक वेट कम करना और सोमवार को फिर से बढ़ाना | कंपनी की सिनेमा में मस्ती करना, पार्टी में पीकर जम के नाचना, मेरे रूममेट का मुझसे ज्यादा इंतज़ार करना आउटिंग के लिए | मुझे लग रहा था कि दुनिया स्थिर हो गयी | भूतकाल में घटी हर घटना मेरे आँखों के सामने चल रही थी |

घर वालों को बताने की हिम्मत नहीं हो रही थी | मुझसे ज्यादा वे लोग घबरा जाते | मैंने सोचा कि 10-15 दिन बाद बता दूंगा | तब तक ये बात कहता रहूँगा कि कंपनी की हालत बहुत बुरी है और कभी भी जॉब जा सकती है |

एक सप्ताह बाद किसी तरह मैं खुद को संभाल पाया | काफी नॉर्मल हो चूका था मैं | मैंने रिज्यूमे बनाया और सब जगह भेजा | अपने सारे संपर्क वाले लोगों को देकर बोला अपने कंपनी में फॉरवर्ड कर दो | भारत के सारे अर्धचालक कंपनियों में वेबसाइट्स के सहारे निवेदन भेजा, जॉब पोर्टल्स पर अपलोड किया और कुछ कंसल्टेंट्स को दिया | पर अभी तक कोई ख़ास अपडेट नहीं है | एक कंपनी में टेस्ट लिखा पर सफल नहीं हुआ | दूसरी कंपनी में इंटरव्यू के बाद पता चला कि वो फ्रीज़ पर चले गए हैं | एक में टेलिफ़ोन पर इंटरव्यू दिया पर आगे कोई जवाब नहीं | बाकी कंपनी से मेल आते हैं, प्रोफाइल मैच होता है, रिज्यूमे ले लेते हैं, उसके बाद कुछ प्रतिक्रिया नहीं देते | कुछ लोग बोल रहे हैं कि अभी कंपनियां इंतज़ार कर रही है मार्केट के स्थिर होने का | उसके बाद लोगों को जॉब देंगे | पता नहीं क्या होता है |

आगे | अपने चाहने से कुछ नहीं हो सकता | बस अब 'वेट एन वॉच ' ही क़र सकते हैं और भगवान के ऊपर सब छोड़ देते हैं |

वैसे भी मैं ज्यादा चिंता नहीं कर रहा हूँ इस बारे में | क्योंकि मैंने सोच लिया है कि आगे भविष्य में मुझे सरकारी नौकरी में जाना है | कुछ जगह पर आवेदन भी कर दिया है इस बार | तैयारी भी कर रहा हूँ | किस्मत हुई तो कहीं अच्छी जगह हो ही जायेगा | अब मुझे पता चला की मेरे घरवाले (खासतौर से मेरी माँ) हमेशा सरकारी नौकरी में जाने के लिए क्यों जोर देते थे | वहां कम से कम जॉब सिक्यूरिटी तो होगी, काम का टेंशन नहीं | सुकून की जिंदगी | पर्सनल और सामाजिक लाइफ अच्छी होगी | छठीं वेतन आयोग के बाद वेतन भी अच्छी-खासी मिलने वाली है |

अगर आपने पिछले वर्ष की वाणी पढ़ी होगी तो आपको याद होगा कि मैंने उसमे लिखा था मुझे अपनी इस ज़िन्दगी से संतोष नहीं है | इस कारपोरेट सेक्टर की जीवन बहुत तीव्र है | आप ज़िन्दगी में जितनी तेजी से ऊपर जाओगे उतनी ही तेजी से नीचे भी आओगे | आज खूब पैसे कमाओगे कल को खाने के लाले पड़ जायेंगे | मैं अब ऐसी ज़िन्दगी नहीं जी सकता | समय आ गया है अपने जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय लेने का | ऐसी कैरियर की तरफ जाने का, जहाँ मुझे 'संतोष' मिले | आखिर मेरी ज़िन्दगी में किस चीज़ की कमी है ? इतनी मशक्कत करने के बाद जीवन के इस मुकाम तक पहुंचा हूँ | और थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा ... बस ... इतनी अच्छी माँ और बहने हैं, जो हर कदम पर मेरा साथ देने को तैयार रहती हैं | कुछ अच्छे दोस्त हैं जो हमेशा मेरा ख्याल रखते हैं |

मैं अपने दोस्तों का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस संकट की घड़ी में मुझे सहारा दिया |

आपकी दुआ की कामना करने वाला..

पूर्व बिट्सियन

संजीव कुमार (2003A3PS022),

जीने का आनन्द

कल को सोच कर
सहम जाते हैं
आज के भी लम्हे
निकल जाते हैं |
परवाह ना कर कल की
मन भर कर जी लो
आज ही
मस्त ज़िन्दगी का अंदाज़
नकारो न तुम कभी भी
क्यों न दुनिया बदल दो
कल; नहीं आज ही
सब कुछ न्योछावर कर दो|
आज ही अभी |

संगीता शर्मा

भाषा विभाग

" काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब ? "

वर्तमान समय में सारगर्भित शिक्षा का अभाव

काफी समय से शिक्षा के सन्दर्भ में ये बात कही जा रही है कि शिक्षा के वर्तमान ढ़ाचे में बदलाव की जरुरत है | तेजी से बदलते समय में शिक्षा को और बेहतर तरीके से संवारने की जरुरत है | आज जिस गति से नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है उसे रोकने का एकमात्र सशक्त उपाय शिक्षा ही है |

बालक मन बड़ा सुलभ कच्ची मिट्टी की तरह होता है, जिस पर छोटी-छोटी बातें अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं | यदि बहुत छोटी उम्र से ही बालकों को उचित और सारगर्भित शिक्षा दी जाए तो आगे चलकर परिवार, देश ,विश्व कल्याण में आज के ये नौनिहाल बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं |

खेद यह है कि वर्तमान परिदृश्य में हमारी शिक्षण व्यवस्था इन सब जरूरतों से कोई सरोकार नहीं रख रही है | बहुत बड़े बदलावों की एकदम सिफारिश कर पाना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए जो व्यवस्था हमने बना रखी है यदि उसी में थोड़ा-थोड़ा सुधार किया जाए तो काफी कुछ बदला जा सकता है | यहाँ पर शिक्षकों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है | उदाहरण के लिए स्कूलों में नैतिक मूल्य और शारीरिक शिक्षा विषय पाठ्यक्रम में होते तो हैं परन्तु ज्यादातर शिक्षक इन विषयों में कोई रूचि नहीं लेते हैं | और चूँकि परीक्षाफल में भी इन विषयों का कोई योगदान नहीं रहता है इसलिए शिक्षक मनमाने ढंग से विद्यार्थियों को अंक आवंटित कर देते हैं | यदि इस पर ध्यान दिया जाये और स्कूलों में छोटे-2 बच्चों को नैतिकता का पाठ जिम्मेदारी से पढ़ाया जाए तो आज विश्व चारित्रिक पतन के जिस भयावह गर्त की ओर जा रहा है उससे बचा जा सकता है | इस सुधार का समर्थन स्कूलों में ही नहीं हमें अपने घरों में भी करने की जरुरत है | तभी हम एक स्वस्थ व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व का निर्माण कर सकते हैं |

भावेश नीखरा

शिक्षण सहायक सी.एस.आई.एस. ग्रुप

मेरे मीत

ओ मेरे मीत, सुन प्रिय मीत
कर ले मेरी विनती स्वीकृत
मेरे अंतर-मन ग्लानि में चूर
सब मेरे पास, मैं सबसे दूर|
तुमसे जो बोली हर वो बात,
थी मेरे हृदय को भी आघात
क्रोधित मन की. बचपन की,वाणी
थी मेरी भूल, है मुझे ग्लानि|
जैसे मरुस्थल में राह गीर
आतुर, मांगे एक बूँद नीर
बिन तेरी मित्रता में उदास
एक तेरी माफ़ी है मेरी आस
मेरी अंतराग्नि, मुझमें व्याप्त
इस को क्षमा से कर दो समाप्त |

शाश्वत माहेश्वरी

लिखित कविता मैंने अपने एक मित्र के साथ हुए विवाद पर आधारित की है | इस रचना को में अपनी गलती की क्षमा याचना के रूप में देखता हूँ |

कहते हैं कि ज़िन्दगी आगे चलने का नाम है और इसी बात को आगे बढ़ाते हुए बिट्सियन्स ने बॉस्म-08 का आगाज़ पिछले साल के मुकाबले ज्यादा प्रतिभागी और प्रचुर जोश के साथ किया।

उद्घाटन कुलपति श्री एल.के.माहेश्वरी ने किया। इसके विशिष्ट अतिथि ए.आर.सी.डी डीन श्री आर.के.मित्तल थे।

इग्निशन पिछले साल की तरह इस बार भी सभी गेमिंग फ्रीक्स को निराश कर गया और वो भी जब एक्सट्रीम गेमिंग और इ.ए. स्पोर्ट्स इसके प्रायोजक थे।

कुल 40 टीमें पिछले बॉस्म में आईं और 900 प्रतिभागियों ने इस आयोजन को और भी बड़ा बनाया। अच्छी बात यह रही कि इसमें 150 लडकियां थी जो कि पिछले सालों के मुकाबले काफी ज्यादा थी।

मुख्य आकर्षण दूसरे दिन हुए परिचर्चा का रहा जो खेलों में सुविधाओं और इसमें करियर के विषय में एक मंथन था। इसमें माननीय अतिथि श्री आर.आर.पिल्लई ने भी भाग लिया।

हर बार की तरह इस बार भी बॉस्म के दौरान होने वाली क्लासों के बारे में बात हुई पर अंततः खिलाड़ियों को इस मामले में निराश ही रहना पड़ा।

http://www.bits-bosm.com

ओएसिस

हल्ला बोल, मस्ती में डोल

20 - 24 अक्टूबर 2009

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ओएसिस अपनी सभी अपेक्षाओं पर खरा उतरा | इस वर्ष ओएसिस के 38वें संस्करण के शुभारंभ के अवसर पर मुख्य अतिथि "श्री संजीव साही" थे जो कि हिंदुस्तान ऐरोनॉटिक्स लिमिटेड के निदेशक हैं | उन्होंने अपने छोटे से भाषण के दौरान बताया कि बिट्स की शिक्षण-प्रणाली विश्व के कई बड़े विश्वविद्यालयों से भी बेहतर है | यह शिक्षण-प्रणाली की ही देन है कि यहाँ के छात्र-छात्राएँ देश में या देश के बाहर जाकर सफलता पा रहे हैं |

मुख्य आकर्षण :

20/10 - एकौस्टिक एजिटेशन (अलुम्नी बैंड)

21/10 - के. के., तरंग, फ्यूजन

22/10 - यूफोरिया, लौंज पिरान्हा

23/10 - सुरेन्द्र शर्मा, ओएसिस क्विज, धरोहर

24/10 - फैशन परेड, वैल डी

इस बार ओएसिस में मुख्य आकर्षण झंकार द्वारा आयोजित मशहूर गायक "के.के." का शो रहा | ओएसिस में लौंज पिरान्हा एवं यूफोरिया भी आकर्षण का केंद्र रहे |

पिलानी में मौजूद कविता प्रेमियों के लिए भी यह ओएसिस यादगार बन गयी जब उन्होंने भारत के सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा को ऑडिटोरियम में साक्षात् देखा एवं उनकी कविताओं का आनंद लिया|

एक अन्य कार्यक्रम, जो सबसे ज्यादा दर्शकों को आकर्षित करने में कामयाब रहा, वह था "बाइक स्टंट" | इंदौर से आये इन चालकों ने अपने कारनामों से निश्चित रूप से छात्रों का दिल जीत लिया |

करीब 5 दिनों तक चले ओएसिस में कई कार्यक्रम देखने को मिले | इस वर्ष ओएसिस के समापन सामारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि बिट्स के छात्र यूनियन संघ के पहले अध्यक्ष श्री निर्मल माथुर थे | पिछले पच्चीस वर्षों से श्री माथुर जिंदल स्टील से जुड़े हुए हैं और स्टील फर्नेस ऐसोसिएशन ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष भी हैं |

अपोजी

23 - 27 मार्च 2009

वर्ष 2008-09 बिट्स के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा | एवं इसका श्रेय जाता है हमारे 27वें तकनीकी महोत्सव, अपोजी 2009 को जिसने सफलता के नए सोपानों को छुआ एवं अपने भव्य एवं वृहद् स्वरुप से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया |

अपोजी का ISO द्वारा प्रमाणित होना संपूर्ण बिट्स के लिए गर्व की बात थी | 1000 से भी अधिक बाहर से आये मेहमान, 100 से भी अधिक कॉलेज एवं 10 के लगभग आमंत्रित व्याख्यान | क्या कोई कसर बाकी रही थी ? शायद नहीं ..

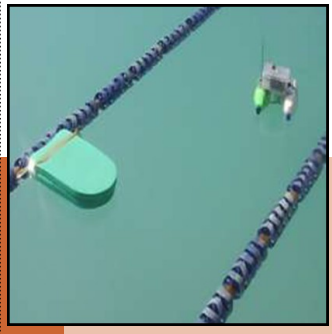

प्रोजेक्ट्स के स्तर में भी वही बात देखने को मिली | हर आयोजन, हर प्रतियोगिता मानो सफलता की एक कहानी थी | प्रमुख आकर्षणों में इस अपोजी में एयर स्ट्राइक, बैटल ऑफ़ वाटरलू, सृष्टि, परिशोध, सिद्धि, कोडर, विज्ञान क्विज़ इत्यादि थे | साथ ही अपोजी के पहले एवं दौरान आयोजित कई कार्यशालाएं भी काफी सफल रही | इनमें से कई तो देश भर की प्रमुख संस्थाओं द्वारा आयोजित थीं | टेक्नोफिलिया, लैब व्यू, फोरेंसिक, एस्ट्रो, इत्यादि प्रमुख थी |

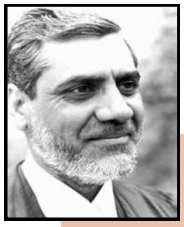

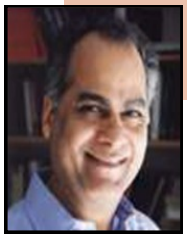

सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, इतनी महान हस्तियों का हमारे बीच शामिल होना | नामों की फेरहिस्त ही काफी है | अपोजी के स्तर को समझने के लिए - जिमी वेल्स (संस्थापक - विकिपीडिया), दिलीप छाबड़िया (ऑटोमोबाइल डिजाईन गुरु), माइकल क्रेमो (फॉरबिडेन आर्कीओलॉजी के लेखक), एम.सी.मेहता (पर्यावरण अधिवक्ता), जॉन सी.माथेर (नॉबेल पुरस्कार - भौतिकी 2006), एस.पी.कोठारी (पूर्व डीन - एम.आई.टी.) एवं और भी | सारे सितारे जब ज़मीन पर एक साथ ही उतर आएं तो शायद ऐसा ही लगता होगा |

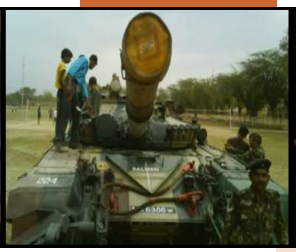

निश्चित रूप से इस अपोजी ने सफलता के जो कीर्तिमान स्थापित किये हैं वह आगे आने वाले वर्षों में हमारे लिए प्रेरणास्रोत का काम करते रहेंगे और साथ ही साथ एक चुनौती भी |

इंटरफेस

मार्च 6 - मार्च 8, 2009

प्रबंधन का बंधन

मैनेजमेंट क्लब, बिट्स पिलानी के अथक प्रयासों के कारण इस आर्थिक मंदी के दौर में भी बिट्स पिलानी का ३२वाँ वार्षिक मैनेजमेंट सम्मलेन "इंटरफेस" नई उंचाईयों को छूने में कामयाब रहा | इस सम्मलेन का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा और विचारों को जीवंत कर इस तेज़ी से बढ़ते उद्योगों के कारोबार में लगाना है |

इंटरफेस 2K9 "परिवर्तन : एक देवदूत सदृश बदलाव" विषयवस्तु पर आधारित था | 6 से 8 मार्च तक चली इस प्रतियोगिता में आई.आई.टी.मुंबई, आई.आई.एफ.टी.दिल्ली, एफ.एम्.एस.दिल्ली, एन.आई.आई.एम.एस. आदि प्रतिष्ठित

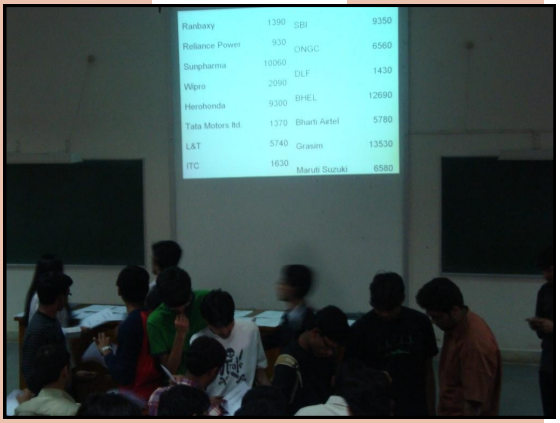

आज की गतिशील कारोबारी दुनिया के मैनेजर में स्वयं तथा संगठन में समयानुसार बदलाव लाने की काबीलियत होनी चाहिए | यही नहीं उसमें परिवर्तनों की दूरदर्शिता को आंकने की क्षमता भी होनी चाहिए | इसी मूल भाव को छात्रों के समक्ष व्यक्त कर इंटरफेस आगे बढ़ता रहा है |

इस वर्ष इंटरफेस के प्रमुख आकर्षणों में वाई,एम.ओ.एम, बिज़-क्विज, बिडिंग तथा फ़ोरेक्स रहे | सेपिएन्ट के निदेशक, फिलिप्स के पूर्व निदेशक और बैन, मेकेंजी और एस.ए.आई.सी. जैसी बड़ी कम्पनियों के मुख्य अफसरों को निर्णायक मंडल अतः मुख्य अतिथि के रूप में देखकर छात्र काफी उत्साहित थे |

इसके अतिरिक्त आपकी जानकारी के लिए इंटरफेस के शानदार अतीत में मनमोहन सिंह, राजेश पायलट, डेरेक ओ ब्रायन, वी.वी.रमन जैसी हस्तियों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराकर छात्रों का पथ प्रदर्शन किया है |

"सा विद्या या विमुक्तये"

"सा विद्या या विमुक्तये" (परम ज्ञान जो मुक्ति दिलाती है), एक वैदिक पौराणिक व्याख्यान है, मुख्य रूप से विष्णु पुराण में से जो कि शिक्षा के अनुसरण में एक बड़ा महत्व रखता है .उपनिषद् जो कि वैदिक पौराणिक साहित्य का सारांश है, ज्ञान (व्यावहारिक) और परम ज्ञान (परमार्थिक) के बीच में अनुभेदन करता है | ज्ञान कुछ ऐसे तथ्यों से बना हुआ है जो संशोधन, सुधार और अक्सर बदलने की प्रक्रिया में रहता है | परम ज्ञान, दूसरी तरफ, ज्ञान का मूर्त रूप है जो शाश्वत है | इस प्रकार, विस्तृत रूप से ज्ञान के दो क्षेत्र हैं - विद्या (परा विद्या) और अविद्या (अपरा विद्या)| जहाँ विद्या, 'स्व' और 'इश्वर' (आत्म ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान) के अविनाशी ज्ञान के अंतर्गत आती है, वहीं अविद्या के अंतर्गत ज्ञान के बाकी विषय आते हैं |

आदि शंकराचार्य, जो कि क्रांतिकारी दार्शनिक और भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च नायक हैं, के अनुसार 'स्व' और आत्म चेतन की प्रकृति है और स्व के अलावा बाकी - अज्ञानता की प्रकृति है | दोनों एक दूसरे का विरोध कर रहे हैं ठीक उसी तरह जैसे - प्रकाश और अन्धकार | जहाँ प्रकाश आत्मज्ञान का बोध करवाता है, वहीं अन्धकार मनुष्य को जन्म और मृत्यु के चक्र में फँसाए रखता है | उनके दृष्टिकोण से शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सभी को विद्या प्रदान करना है | अविद्या में सिर्फ़ वही ज्ञान है जो "स्व-विद्या" से परे है - जैसे ज्ञान जो कि भौतिक सुख प्राप्ति करने में सहायक होता है | इसका अध्ययन शिक्षा के हर शास्त्र में प्रमुख है | जैसे ही विद्या का उदय होता है वैसे ही अज्ञान का अन्धकार छंट जाता है |

"विद्या" जो कि गोपनीय और गुह्य विद्या के तौर पर भी जानी जाती है, "मैं" या "आत्म" का ज्ञान बोध करवाती है | यहाँ "मैं", "अंहकार" से संपूर्णतः भिन्न है और सभी ज्ञान और परम ज्ञान का केन्द्र है | बिना इस 'मैं' की जड़ के, कोई ज्ञान या परम ज्ञान की प्राप्ति कभी संभव नहीं हो सकती है | अतः "मैं" की अनंत प्रकृति को जानना अनिवार्य है | यह "मैं", उपनिषद् और भगवद गीता के अनुसार अजन्मा और शाश्वत है; अतः अमर भी है | आत्मा हर मनुष्य में मौजूद है | वह शरीर, जिसमें आत्मा अवस्थित है, जन्म लेता है और समय के साथ नष्ट हो जाता है | यह वक्तव्य भगवद गीता के द्वितीय अध्याय में बहुत ही सुंदर शब्दों में वर्णन किया गया है : "अजो नित्य शाश्वतोयं पुराणो- न हन्यते हन्यमाने शरीरे" | यह प्रारंभिक चेतना या जागरूकता की प्रकृति है (जो कि ऐतरेय उपनिषद् के अनुसार 'प्रज्ञानं ब्रह्म' कहलाता है) जिसके बिना कोई भी ज्ञान सम्भव नहीं है |

इसी विषय को छान्दोग्य उपनिषद् में भी चित्रित किया गया है | इसके अनुसार शिक्षा, पराविद्या के साथ ही सम्पूर्ण हो सकती है | पराविद्या मनुष्य को संसार-सागर के दुःखों से ऊपर उठने की क्षमता देती है और पिछले जन्मों की प्रतिक्रियाओं (प्रारब्ध) से भी मुक्त करवाती है |

छान्दोग्य उपनिषद् में पिता उद्दालक और पुत्र श्वेतकेतु के वार्तालाप से यह स्पष्ट है | इसके अनुसार एक उद्दालक नामक एक विद्वान् हुआ करते थे जो आरुणि के पुत्र थे | उद्दालक के एक ही बेटा था, श्वेतकेतु | उन्होंने अपने पुत्र को १२ साल की उम्र में गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजा | जब वो वापस लौटा तो उसकी उम्र २४ साल हो चुकी थी | उसने सभी वेद, शास्त्र और धर्मग्रन्थ पढ़े थे और मनन किया था | शायद ही ऐसा कुछ धार्मिक रह गया था जो उसने न पढ़ा हो | अतः उसमें अहम् की भावना जागृत हो गयी थी कि उसके समक्ष विद्वान् कोई नहीं है क्योंकि वह सब कुछ जानता है और लगभग सर्वज्ञ है | जब उसके पिता ने उसका यह व्यवहार अनुक्षण किया तो अंत में उससे पूछा , "क्या तुम्हें वो वस्तु ज्ञात है जिसे जानने से सब कुछ जाना जा सकता है ? क्या तुम्हें वो वस्तु ज्ञात है जिससे ना सुनाई देने वाली वस्तुएं भी सुनाई देने लगे ? क्या तुम्हें वो वस्तु ज्ञात है जिससे हर न सोचे जाने वाली सोच सोची जा सकती है ?" पुत्र यह प्रश्न सुनकर आश्चर्यचकित रह गया | उसने कभी भी ऐसी बातें नहीं सुनी थी - कैसे एक ना सुना जाने वाला शब्द सुनाई दे सकती है? कैसे ना सोची जाने वाली सोच सोची जा सकती है ? कैसे ना समझी जाने वाली बात समझी जा सकता है ? उसने पूछा, "यह क्या वस्तु है ? मुझे इस विषय में कोई ज्ञान नहीं है | मुझे कभी भी ऐसी बातें नहीं सिखाई गई है |" वह विनम्रता के साथ अपने पिता से यह रहस्य समझाने को कहता है | तब उसके पिता ने समझाया : "हम सब वृक्षों की तरह मानव शरीर धारण किये हैं - जिसके मूल 'चैतन्य' रुपी जीवन के ऊपर आधारित हैं | जिस मुहूर्त पर यह चैतन्य शरीर से बहिर्गत हो जाता है, अर्थात हमारी प्राण वायु शरीर से पृथक हो जाती है, हम मृत्यु मुख में पतित हो जाते हैं | चैतन्य और आत्मन के बीच कोई अंतर नहीं है | इस संसार मैं हर वस्तु और हर रचना में चैतन्य है | इस संसार में एक से अधिक चैतन्य नहीं है | यद्यपि संसार में अनगिनत शरीर हैं, रूप अनेक हैं, अनेक व्यक्ति हैं पर चैतन्य केवल एक ही है | यह दृश्यमान जगत का प्रत्येक अस्तित्व चैतन्य-आत्म के ऊपर आधारित है एवं प्रत्येक वस्तु की सृष्टि, स्थिति और संहार चैतन्य-आत्म ही साधन करता हैं |

"वो चैतन्य-आत्म तुम हो, श्वेतकेतु - 'तत् त्वं असि', श्वेतकेतु" - पिता ने कहा |

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि छात्र श्वेतकेतु ने यह स्वीकार किया कि उसने शिक्षा की सभी शाखाओं का अध्ययन किया है किन्तु सभी ज्ञान का सारांश या सभी ज्ञान की जड़-अविनाशी आत्म-चैतन्य के मर्म भेद करने में सिद्ध मनोरथ नहीं हो पाया था - जिसे प्राप्त करने पर जो सुना नहीं गया है, वह सुनाई देने लगता है | जिसे सोचा नहीं गया है, वह सोचा जाने लगता है | और जिसे समझा नहीं गया है, वो समझा जाने लगता है | ऐसे आत्म-चैतन्य के ज्ञान को परम ज्ञान कहते हैं जो एक महाशक्ति है और मनुष्य को परमानंद प्रदान करने के साथ-साथ सर्वज्ञ और सर्वव्याप्तामय बना देता है | यह विषय एक साधारण सैद्धांतिक तत्त्व बोध नहीं है; यह आत्मनुभूति और आत्मदर्शन के विषय का साक्षात्कार है | यह साक्षात्कार हो जाने पर ज्ञान सूर्य उदित होता है एवं अविद्या और अज्ञान अन्धकार का लय हो जाता है |

केवल अविद्या का ज्ञान, जो कि भौतिक ज्ञान (जैसे कि विज्ञान या इंजीनियरिंग की शिक्षा) के विषय का क्षेत्र है, महाशक्ति नहीं कहलाता है; क्योंकि यह मानव सभ्यता के विनाश का कारण भी बन सकता है यदि उपनिषद् जैसे आध्यात्मिक विज्ञान के अनमोल मूल्यों द्वारा परिचालित ना हो | बिट्स का प्रतीक चिन्ह (एम्बलेम) [अणु संरचना और रॉकेट विज्ञान और इंजीनियरिंग / प्रौद्योगिकी के लिए] सटीक तरीके से पदार्थ ज्ञान के विषय को चित्रित करता है | यह अध्यात्मिक विज्ञान को भी पद्म-पुष्प [मानविकी और सामाजिक विज्ञान] द्वारा दर्शाता है | अति सुन्दर तरीके से विज्ञान, इंजीनियरिंग और आध्यात्मिक विज्ञान का सामंजस्य यह एम्बलेम में दर्शाया गया है | एम्बलेम के मध्य में पद्म-पुष्प की उपस्तिथि यह संकेत करती है कि इसकी उभय दिशाओं में अवस्थित विज्ञान और इंजीनियरिंग की शिक्षा मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान के ऊपर आधारित होनी चाहिए | उपनिषद् जैसे आध्यात्मिक शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक शिक्षा की शाखा का लक्ष्य सम्पूर्ण ज्ञान है | शिक्षा का पूर्णता आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के ऊपर निर्भर करती है | अतः शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य उपनिषद् ग्रंथों का अध्ययन कर अध्यात्मिक विज्ञान के रहस्यों पर से परदा उठाना और अविद्या के अन्धकार को विद्या के प्रकाश से दूर करना है | अतः यह मनुष्य जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक ज्ञान को प्राप्त करना या अनुसंधान करना नहीं है | शिक्षा यहीं पर समूर्ण नहीं होती है | शिक्षा तभी पूर्ण होती है जब आत्म-विद्या पर प्रभुत्व प्राप्त किया जाता है | वह विद्या, वह परम ज्ञान, जो मनुष्य को इस संसार के पुनः-पुनः जन्म मृत्यु से भरे माया जाल से मुक्त करवाती है - "सा विद्या या विमुक्तये" |

पर यहाँ तक की गयी चर्चा से यह नहीं समझना चाहिए कि यह हमें भौतिक ज्ञान का अध्ययन करने के लिए निरुत्साहित कर रहा है | भौतिक ज्ञान भी संसार और जीवन से संबंधित विभिन्न जानकारी प्रदान करने में अपनी भूमिका निभा रहा है | फ़िर भी वेद व्यास और आदि शंकराचार्य जैसे महान संतों ने दृढ़ता से यह कहा है कि हमें इसमें पूरी तरह से नहीं खोना चाहिए क्योंकि यह हमारा 'अन्तिम लक्ष्य' नहीं है; इसकी सहायता से हमें केवल अपना जीवन का भरण पोषण करना है ओर अपने 'अन्तिम लक्ष्य' की और बढ़ते रहना है |

डॉ. सूर्यकांत महाराणा
सहायक प्रोफ़ेसर
Humanistic Studies Group

इस सादगी पे कौन न मर जाए ए खुदा |
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं ||

आदत को आदत बनाने की आदत सी हो गयी है

हर भूल को छुपाने की आदत सी हो गयी है
खुद के हर ज़र्रे से वाकिफ हूँ फिर भी
खुद ही से खिलाफत करना भी बगावत सी हो गयी है
क्यूंकि आदत को आदत बनाने की आदत सी हो गयी है

पेड़ के मुरझाये फूल सवाल उठाते हैं
खुद को देखने से घबराते हैं
माली हूँ फिर भी उन्हें ही सुनना इबादत सी हो गयी है
क्यूंकि आदत को आदत बनाने की आदत सी हो गयी है

ढह न जाए वो किला जो सिर्फ सूराखों से रौशन है
देख पाऊँ अक्स उसका ऐसा तो ज़रूर मौसम है
खुद से ही नज़रें मिलाने में शरमाहट सी हो गयी है
क्यूंकि आदत को आदत बनाने की आदत सी हो गयी है

खुद से ही हार गया हूँ मैं बाज़ी
वक़्त है मुकम्मल फिर भी नहीं हूँ राज़ी
उम्र न आई फिर भी मौत की गुजारिश सी हो गयी है
क्यूंकि आदत को आदत बनाने की आदत सी हो गयी है

मृणाल मनुज

आंसू

ये जो नयनों से बहते हैं
निर्बाध गति से,
लिए हुए कितने ही
संवेदना साथ में |

अपनी गाथा को गाते हैं
हृदय की कहानी कहते हैं,
अन्तःस्थल से वह करुण
दुःख का सागर बन बहते हैं |

आँखों में नमी बन
उनका सहारा बनते हैं,
खुद तो खामोश रहकर भी
सब कुछ जैसे कह जाते हैं |

वे निर्मल मोती जैसे
झर-झर नयनों से गिरते हैं,
वेदनाओं को साथ लेकर
हमदर्दी के पात्र बनते हैं |

दुःख में साथ दें न दें
वो तो साथ निभाते हैं,
किसी कोने से आँखों के
चुपचाप वह निकलते हैं |

हाँ, ये आंसू ही तो हैं

जो खुद को नष्ट करने के लिए ही
खुद को उजागर करते हैं,
हृदय की टीस को खुद में दबाकर
धरती में मिल जाते हैं |

अनिरबन पाल

जागते रहो

भारत माता हम सब की जननी है | उसने मुझे, आपको, हम सभी को जन्म दिया है | हम उसी की गोद में खेले हैं | वह भारत माँ की आँचल ही थी जिसने कड़ी धूप में भी हम पर शीतल छाया किया | हम बड़े हुए | हममें से कुछ देश का नेतृत्व करने वाले नेता बने तो कुछ ने वैज्ञानिक बनकर भारत को गौरवान्वित किया | कुछ सैनिक बने और भारत की ओर उठने वाली हर ऊँची आवाज़ को भारत माँ के कानों तक पहुँचने नहीं दिया, तो वहीँ कुछ देश को लूटने वाले बने और कुछ ने तो भारत माँ को आतंकवाद की अग्नि में ही झुलसा दिया | ऐसे में भारत माँ क्या करें ! अपने ऐसे पुत्रों के होने पर स्वयं को धन्य मानें, जो हमेशा कामना करते हैं कि वे इस माँ के चरणों में फूल बनकर गिर जाएँ या फिर ऐसे पुत्रों के आचरणों तथा व्यवहारों के प्रति शोक मनाये जिनके कृत्यों से उनका ह्रदय प्रतिदिन छलनी-छलनी हो जाता है | यदि अनुभव कर देखें तो निश्चित ही हमें भारत माँ किसी कोने में बैठी सिसकती दिखाई देंगी |

सारे जहाँ में एक ही, बेचारा भारत हमारा

भ्रष्टाचारी नेता और आतंकवादी...दोनों ही एक ही डाल के पंछी हैं | अंतर केवल इतना है, एक के पास देश को लूटने का कानूनी अधिकार है जो उन्हें हम जैसे मूर्ख देशवासियों ने दिया है | वहीं दूसरे वर्ग (आतंकवादी) ने अपने अधिकार स्वयं हीं बनाये हैं | एक के विस्फोटकों की आवाज़ इतनी तीव्र होती है कि उसकी धमाके की आवाज़ सभी दिशाओं में गूंज उठती है, तो दूसरे वर्ग (नेताओं) के विस्फोटक ध्वनिरहित होते हैं जिससे किसी को शारिरिक आघात भले हीं न पहुचें लेकिन मानसिक आघात की गहराई शायद ही कभी भर पाएं | हमारे नेताओं की आरक्षण जैसी नीतियाँ किसी विष्फोट से कम नहीं हैं | जो पता नहीं कितने नवयुवकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है तथा पद के श्रेष्ठाधिकारी होने के बावजूद उन्हें उस अवसर से वंचित कर देती है | सर्वप्रथम आरक्षण की बात राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने उठाई थी | यह बात आज से लगभग साठ वर्ष पूर्व की है | इस बीच लोगों में और उनकी परिस्थितियों में कई परिवर्तन हुए | देश बदल रहा है तो फिर हमारी ये नीतियाँ क्यों नहीं बदलती हैं ? सामान्य वर्ग भले गरीबी रेखा से कितना भी नीचे हो, उनके लिए सरकार के पास कोई नीति नहीं है | आज एक भी नेता ऐसे नहीं हैं, जो इस भारत माँ के बारे में गलती से सोच लें | सारी पार्टियों के पास एक दूसरे की पोल खोलने के अलावा और कोई काम नहीं है | सभी को सत्ता चाहिए और इसके लिए तो अगर उन्हें अपना जमीर भी बेचना पड़े तो उन्हें सौदा सस्ता ही लगता है |

हम भारतवासी हमेशा से यह गीत गुनगुनाते हैं "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा.. हम बुलबुले हैं इसके, ये गुलसितां हमारा |"

दुःख में सिमरन सब करे, सुख में करे ना कोय |
जो सुख में सिमरन करे, ताऊ दुःख काहे को होए ||

क्या अब भी भारत वास्तव में गुलसितां है ? बिलकुल नहीं | अब तो हमें यह गीत गुनगुनाना चाहिए

"सारे जहाँ में एक ही, बेचारा भारत हमारा.. जिसके गुलसितां को इसके अपने बुलबुलों ने ही लूट डाला |" आतंकवाद की आग जो पूरे भारत को जल रही है वह किसी से भी छिपी नहीं है | भारत हमेशा से शांतिप्रिय देश रहा है | हमने न किसी का हक लिया है और न ही तानाशाह बनकर किसी देश को तबाह किया है | तो फिर हमारे साथ ऐसा क्यों ? हमारा देश ही एक ऐसा देश है जहाँ यदि दीपावली कि रौशनी से मंदिर जगमगाता है, हिन्दू मुसलामानों के मस्जिदों को भी कभी अंधेरे में छोड़ना पसंद नहीं करते | जो शीश हम मंदिर के सामने गुजरते हुए झुकाते हैं, वही शीश मस्जिद और गुरूद्वारे से गुजरते समय भी झुक ही जाता है | हममें वह कट्टरता नहीं है | लेकिन हमारे देश के लोग ही एक दूसरे के रक्त के प्यासे बने हुए हैं | वह भी धर्म को लेकर | भगवान किसने देखा है, न हिन्दू ने अपने राम को देखा है, न मुसलमान ने रहीम को | यदि राम और रहीम दो अलग देवता हैं और ये दोनों क्रमशः हिन्दुओं और मुसलामानों के आराध्य हैं तो क्या उन्होंने आकर ये सिखाया है कि हम इस विशेष धर्म में आते हैं और किसी धर्म को मानने वाले इंसान नहीं हैं और उन्हें जीने का कोई अधिकार नहीं है ? यदि ऐसा है तो न राम मेरे आराध्य हैं और न रहीम मेरे वंदना के लायक हैं | और ऐसा नहीं है कि भारत सरकार हिन्दू वर्ग के अलावा अन्य वर्गों के साथ पक्षपात करती है | हमारे देश में जितनी नितियाँ गैरहिंदूवर्ग के लिए हैं उतनी तो हिन्दुओं के लिए भी नहीं हैं | इसके बावजूद भी लोगों को पता नहीं कौन सी असुरक्षा का अनुभव होता रहता है | हमें दुःख उतना ही होता है जब मस्जिद में धमाके होते हैं या फिर उड़ीसा के ईसाई धर्म के अनुयायियों के साथ दुर्व्यवहार होता है | क्योंकि दोनों ही परिस्थितियों में खून हमारे अपनों का ही बह रहा है | तो फिर लोग इतने निर्दयी कैसे हो सकते हैं ? हम एक साथ रक्त की नदियाँ बहा दें | हम सब इतने कठोर कैसे हो सकते हैं ?

मेरे इस दीर्घलेख का उद्देश्य लोगों की मरी हुई भावनाओं को जगाना है | हमारे पढ़ लिखकर शिक्षित होने का सार तभी है जब हम अपने आस पास हो रहे अन्याय को अनुभव करने के साथ साथ उसके विरुद्ध आवाज़ भी उठायें | सबसे बड़ी बात यह है की न केवल हम इन विषयों पर सोचें बल्कि उन पर अमल भी करें | यह बात अलग है कि आतंकवादियों को अपनी बात समझाना आकाश पर फूल खिलाने जैसा है लेकिन हम अपने देश के नेताओं पर अंकुश तो लगा ही सकते हैं | देश हमारा है, तो सोचना भी हमें ही होगा | आखिर हमारी भारत माँ को भी तो हमसे कुछ उम्मीदें हैं |

सुमन तिवारी

जब तू आया जगत में, लोग हँसे तू रोय |
ऐसे करनी ना करी, पाछे हँसे सब कोय ||

खिड़की पे

खिड़की पे बाहें टिकाये
ओर गगन की देख रहा था

इक क्षण यहीं इक क्षण नहीं
वो मन को व्याकुल कर रहा था

झाँक कर चादर से अपनी
ज्यों वो मुझको चिढ़ा रहा था

मैंने पूछा क्यूँ नहीं रुकते
क्षण दो क्षण मैं लूं निहार

बाहर निकलो दीवारों से
सुनो हवाओं का प्रहार

मेरा क्या, अब हूँ तब ना हूँ
सखी है मेरी, मेरा सार

ना मैं तुमसे मिल सकता हूँ
ना तुम मुझको छू सकते हो

इक-कंठ हवा से होकर देखो
मुझसे बातें कर सकते हो

बांह फैलाकर आँख मूँद कर
जग से मिलने जा सकते हो

अब मैं हवा के संग संग होके
हाथ पकड़ के निकल पड़ा हूँ

कुनाल गुप्ता

जीवन की अभिलाषा

उम्मीदों की राहों पे
यूँ चल पड़ा हूँ मैं
अकेला अनजानों में|

कभी न रुक पाऊँ मैं
ऐसे हो रफ्तार मेरी
हर मंजिल पर राही हो
यही दरकार मेरी

हर अन्धकार का दीपक हूँ
हर रात का हूँ दिन
फिर भी क्यों हूँ मरता हूँ, तिल-तिल??

खोज रहा हूँ जाने किसको
अब तक न समझ पाया जिसको
मेरे अंतर्मन में था वो,
प्रभु जीवन तुझे अर्पण हो |

अभिषेक आनंद

आतंकित क्यों ?

हमें नफ़रत है उन लोगों से ,
जो नोच-नोच कर खाते हैं,
सुबह को मन्दिर, शाम को मस्जिद,
लाशों का ढेर लगाते हैं |

यह कौन सी तालीम है ज़नाब,
जो दोस्त को दुश्मन बनाती है,
घर पड़ोस में रहता है,
डर आतंक फैलाता है |

सच्चाई क्या है बिना जाने,
कोई क्यों कौम पे प्रश्न उठाता है,
क्या हमारी ये गलती है,
वो इस गली से जाता है |

तो सुनो मेरी यह बात नहीं,
पुरखों की कही जुबानी है,
हम भूल गए कर्तव्यों को,
बच्चों को राह दिखानी है |

माना सब व्यस्त हो कल की दूनिया में,
धन कमाने से फुर्सत कहाँ ?
पर किसके लिए हो जोड़ रहे,
आज साथ है कल कहाँ ?

माताओं-बहनों से मेरी
इतनी सी गुजारिश है,
पड़ोसियों से तुलना कर,
तुम्हें क्या मिल जाएगा ?

हाँ! एक बात तो साफ़ है,
बेटा अपना ही घर जलाएगा,
रोको- रुको चिल्लाते रहोगे,
वो लहू से खेलता जाएगा,
धारदार हथियारों से जब,
वो गोला बरसाएगा |

ताने पे ताना मारोगे,
पर इससे कुछ ना कर पाओगे,
वो नशे का आदि है,
तुम कैसे उसे मनाओगे ?

क्या हम मानव वो मानव हैं ,
जो धरती को स्वर्ग बनाएँगे ?
या प्यारी धरती को कलयुग में,
जिन्दा ही खा जाएँगे ?

जब कल्पना से भय खाते हो,
तो कुछ काम आओ हैं कर लेते,
खिलौनों की जगह बच्चों से,
बैठ चार बातें ही कर लेते |

यह जरुरी नहीं
बापू-नेहरू की गाथा ही सुनानी है,
जरा सोच समझकर कार्य करो,
बच्चों में अलख जगानी है |

एक छोटा सा सपना हम सबको,
आओ आज दिखलाते हैं,
प्यार से सब कार्य करो,
सारे काम बन जाते हैं |

ले आओ आज संकल्प सभी,
घर-घर दीप जलाएंगे,
बच्चो बूढ़ों में बैठ कर,
शान्ति को अपनाएंगे |

प्रेम शंकर

तेरी आँखों के समन्दर में

तेरी आँखों के समंदर में है इक कश्ती
जिसमें बसी मेरी दुनिया , मेरी हस्ती,
मैं सवार हूँ उस कश्ती का , उस समंदर का

जिससे नाता ना कोई इस धरती का |
न जाने क्यों पड़ा मैं इस उलझन में
मुझे ज़मीन पर जाने दे,
वहाँ जाकर भी तू मुझे
दो आँसू बहाने दे |
पहुंचा अगर ज़मीन पर कभी
तो भी तुझे भुला न पाऊँगा,
लेकिन कह देता हूँ इतना मगर
तेरे सामने फिर कभी ना आऊंगा |

तूने ठुकराया मेरे प्यार को
लेकिन मेरे लिए तू मेरी है,
पर इतना बता दूँ तुझे ओह बदकिस्मत
इसमें जीत मेरी और हार तेरी है |

तेरी आँखों के समंदर में है इक कश्ती
जिसमें बसी मेरी दुनिया मेरी हस्ती

सौरव लबाना

यादें

ना जाने मुझे ये क्या हो गया है,
ये मैं कहाँ आ गया हूँ
अब तो ये जानी पहचानी जगह नई सी लगने लगी है
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है..

हर तेज़ चलती हुई साइकिल में कार्तिका ढूँढता हूँ ,
हर इन्कमिंग कॉल में "कॉलिंग सहज" ढूंढता हूँ ,
हर बार स्काई में इन्विन्सिबल्स ढूँढता हूँ ,
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है....
ये मैं कहाँ आ गया हूँ..

हर डी.एम. लैब में बुक्कू ढूंढता हूँ ,
हर लाइब्रेरी विज़िट में मिनी ढूंढता हूँ,
हर बर्थडे में गिनी ढूंढता हूँ ,
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है....
ये मैं कहाँ आ गया हूँ..

हर सर्द कॉम्प्री की रात में जयंत ढूँढता हूँ,
हर कोड रैश में मनीष ढूँढता हूँ,
हर बार 1101 में पोपट ढूँढता हूँ,
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है....
ये मैं कहाँ आ गया हूँ..

हर बजती हुई अलार्म में विनोद ढूँढता हूँ,
हर हास्य कवि सम्मलेन में अमन ढूँढता हूँ
हर कनॉट विज़िट में वाई.फाई. ढूंढता हूँ,
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है....
ये मैं कहाँ आ गया हूँ..
अब यहाँ सब कुछ नया सा लगता है
ना जाने मुझे ये क्या हो गया है....
ये मैं कहाँ आ गया हूँ..

सौरभ अग्रवाल

एक बात

और दृगों में कुछ सपनों
की आशाओं का वास भी।
मन के विचलित होने का
यूँ अनजाना एहसास भी था।

तभी ममत्व के आँगन में
किलकारी की आस जगी
कोमल काया कैसी होगी ?
ये कल्पना भी साथ जगी

तभी ममत्व के आँगन में
वीराने की हवा चली
कुलदीपक की मांग हुई
और मेरे सीने में ख्वाब जले

ढली उमंगों के आँगन में
रही-सही "एक बात" बची
कुछ सीने में प्रश्न उठे
कुछ अधिकारों की मांग हुई..

तन से स्त्री
मन से स्त्री
फिर स्त्री जनने का
अधिकार नहीं ?

निहारिका सिंह
सीनियर रिसर्च फेल्लो

आखिर क्यों

चला न था कभी दुर्गम राह पर क्या कभी
भला आज फिर क्यूँ मेरे पैर कांप रहे हैं
राहें ना ही कभी आसां थीं और ना ही मंजिलें दुष्कर
साँसे चलती थीं अरमानों की टोली लेकर
रोम रोम भरा रहता था उत्साह से कभी
आज राहें भी वही हैं पर मंजिलें नई हैं
कर्ता भी वही है पर एक नयापन है
स्वयं को खोजता हुआ चला जा रहा हूँ इस बीहड़ में
अनभिज्ञ होकर आशंकित विजय के नाद में
आज भला क्यूँ मैं खुद को औरों से कमतर आंकता हूँ
क्यूँ मैं क्षण क्षण निज को मायूस सा पाता हूँ
था न तो कल भी कोई साथ मेरे
हूँ आज भी मैं बिलकुल अकेले
पर क्यूँ मैं अब खुद को अधूरा पाता हूँ
सुन उपदेश कुशल बहुतेरे सुनहरे अतीत की यादें संजोये
हर वक्त जहाँ खुद को सफलतम पाता था
आज वहीं पल पल खुद से ठगा जाता हूँ
कृष्ण की गीता भी खोखली ज्ञात होती है
जानता नहीं क्या है यह समय का फेरा
या फिर सिर्फ मेरे निरुत्साह का बटेरा
हर आशा निराशा होती जाती है
और मेरी यात्रा अधूरी ही धरी रह जाती है

सुनील कुमार शर्मा

श्रद्धांजलि मिर्ज़ा गालिब को...

पूरा नाम : दबीर-उल-मुल्क, नज्म-उद्-दौलाह मिर्ज़ा असद-उल्लाह बैग ख़ां

जन्म : 27 दिसम्बर 1796

निधन : 15 फरवरी 1869

जन्मस्थान : कला महल, आगरा

तखल्लुस : असद, गालिब

दबीर-उल-मुल्क, नज्म-उद्-दौलाह मिर्ज़ा असद-उल्लाह बैग ख़ां, ग़ालिब (ग़ालिब अर्थात प्रभावी) और असद (असद अर्थात शेर) **(27 दिसम्बर 1796 - 15 फरवरी 1869)** भारत के एक प्रतिष्ठित उर्दू और पारसी कवि थे | ग़ालिब को भारतीय उप-महाद्वीप का सबसे लोक-प्रिय और प्रभावशाली उर्दू कवि माना जाता है |

आश्चर्य की बात यह है कि उन्होंने कभी भी अपनी आजीविका के लिए काम नहीं किया | उन्होंने राजकीय सहायता, ऋण या दोस्तों की दरियादिली पर ही जीवन व्यतीत किया | उनको लोकप्रियता तो मिली पर मरणोपरांत और ख़ास बात कि उनका मानना था कि उनके उम्र ने उनकी कला को नहीं पहचाना है पर आने वाली पीढ़ियाँ उनके काम को ज़रूर सराहेंगी और यह उन्होंने अपनी ज़बरदस्त लेखनी से सच कर दिखाया | यह तो इतिहास में दर्ज ही है | और यह भी सच है कि वो आज भी उर्दू कवियों में सबसे ज्यादा माने और उक्त कियेजाते हैं |

प्रारंभिक जीवन

ग़ालिब का जन्म तुर्की कुलीनतंत्रीय पितरावली के घर में **आगरा** के **कला महल** में हुआ था | ग़ालिब ने अपने पिता और अपने चाचा को छोटी सी उम्र में ही खो दिया जिसके बाद वो दिल्ली आ गए |

उनकी प्राथमिक पढ़ाई के बारे में कुछ भी साफ़ नहीं है हालांकि यह कहा जाता है कि उस समय के कुछ सबसे तेज़ दिमाग उनके दोस्त हुआ करते थे |

काव्य सफ़र

ग़ालिब **उर्दू और पारसी**, दोनों में ही लिखते थे | वैसे उनकी सबसे ज्यादा पढ़ी और सराही जाने वाली गज़लें उन्होंने **19 साल** से पहले-पहले ही लिखी थी |

ग़ालिब से पहले ग़ज़लों को सिर्फ प्यार-ए--इज़हार के लिए ही गाया और लिखा जाता था पर ग़ालिब ने ग़ज़लों में दर्शन, कष्ट और ज़िन्दगी की रहस्यों को भी बखूबी उकेरा | हालांकि उनकी गज़लें काफी सराही गयी हैं पर उनकी लेखन की शैली को समझने के लिए आम आदमी को थोड़ी मशक्कत ज़रूर करनी पड़ती है |

पुरानी ग़ज़ल परंपरा को कायम रखते हुए उनकी काफी ग़ज़लों में प्रियतम की पहचान और लिंग को अनिश्चित ही रखा गया है | प्रियतम एक खूबसूरत नारी, एक नौजवान युवक या भगवान भी हो सकते हैं | ग़ालिब के अंतर्दर्शनात्मक और दार्शनिक छंद भी काफी उत्कृष्ट हैं |

तखल्लुस (वो नाम जिसके अंतर्गत कवि अपनी कविता लिखते हैं)

लौकिक दंतकथा कहते हैं की एक बार जब उन्होंने किसी दूसरे कवि द्वारा एक शेर सुना जिसमें उस कवि ने '**असद**' तखल्लुस का इस्तेमाल किया था, उसके बाद ही उन्होंने अपना तखल्लुस '**ग़ालिब**' कर लिया |

"असद उस जफा पर बुतों से वफ़ा की
मिरे शेर शाबाश रहमत खुदा की"

कहते हैं कि इस दोहे को सुनने के बाद ग़ालिब ने अफ़सोस जताते हुए कहा, "जिस किसी ने भी यह दोहा लिखा है उसे खुदा के रहमत की वाकई में ज़रूरत है (ऐसी दुखद उर्दू दोहे को लिखने के लिए) अगर मैं 'असद' तखल्लुस का इस्तेमाल करता हूँ तो फिर लोगों को लगेगा की यह भी मैंने ही लिखा है..ओहो लानत होगी मुझपे |"

और इसी कारण उन्होंने अपना तखल्लुस "ग़ालिब" रख लिया |

पर यह बस एक कहानी ही है शायद | शोधकर्ता मानते हैं कि ग़ालिब दोनों ही तखल्लुस का इस्तेमाल करते थे और किसी भी एक नाम को तरजीह नहीं देते थे |

निजी ज़िन्दगी

1810 के आस-पास **13 साल** की उम्र में उमराव बेगम के परिवार में, लोहारू के नवाब, इलाही बख्श खान की बेटी से उनका निकाह हुआ |

उनके सात बच्चे हुए पर कोई भी हिफाज़त न रह सके जिसका गम ग़ालिब कि ग़ज़लों में गूंजता है |

ग़ालिब का इन्तकाल **15 फरवरी, 1869** में हुआ |

गली कासिम जान, बल्लीमारान, चांदनी चौक, पुरानी दिल्ली, जहाँ ग़ालिब रहते थे, को अब ग़ालिब की प्रदर्शनी में बदल दिया गया है |

गालिब पर बनी फिल्म और टीवी सीरियल

भारतीय सिनेमा ने ग़ालिब को श्रद्धांजलि देते हुए **1954** में एक फिल्म बनाई थी जिसका नाम **"मिर्ज़ा ग़ालिब"** था | इसमें **भारत भूषण** ने ग़ालिब का रोल अदा किया था और **सुरैय्या** ने प्रेमिका वेश्या , "**चौदहवीं**" का रोल निभाया था |

पाकिस्तानी सिनेमा ने भी "मिर्ज़ा ग़ालिब" नाम से **1961** में एक फिल्म बनाई थी | इसमें पाकिस्तानी सुपरस्टार **सुधीर** ने ग़ालिब और **मैडम नूर जेहान** ने चौदहवीं का रोल निभाया था |

गुलज़ार ने **डी.डी-1** पर "मिर्ज़ा ग़ालिब" नाम से **1988** में टीवी सीरियल बनाया था जिसमें **नसीरुद्दीन शाह** ने ग़ालिब का रोल निभाया था | इसमें जगजीत और चित्रा सिंह द्वारा गाई गयी ग़ज़लें पेश की गयी थीं|

हिन्दी ब्लॉग जगत में भर्तियाँ

Recruitment

भारतीय चिट्ठा सेवा (हिन्दी विभाग) के लिए विभिन्न पदों पर रिक्तियां निकाली गई हैं। पदनाम, कार्यक्षेत्र, योग्यता, अनुभव और वेतन श्रृंखला की जानकारी संबंधित पद के साथ दी गई है। अभ्यर्थी एक से ज्यादा पदों के लिए भी आवेदन कर सकते हैं। महिलाओं व विशेष श्रेणी के चिट्ठाकारों को नियमानुसार आरक्षण का लाभ दिया जाएगा।

1. टिप्पणी अधिकारी (Comment Officer)

कार्यक्षेत्र- सभी हिन्दी चिट्ठों पर टिप्पणियां पढ़ना, तर्कसंगत टिप्पणियां करना (एक दिन में कम से कम 100 अपेक्षित)
आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपयुक्त)
अनुभव- कम से कम पांच चिट्ठों की शीर्ष टिप्पणीकार सूची में शामिल होना अनिवार्य, चिट्ठाकारी में लंबा अनुभव वांछनीय
वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

2. पहेली सहायक (Riddle Assistant)

कार्यक्षेत्र- हिन्दी चिट्ठों पर चल रही विभिन्न पहेलियों के जवाब देना, पहेली के एक नए ब्लॉग निर्माण में सहयोग
आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (युवा व ऊर्जावान अपेक्षित)
अनुभव- इंटरनेट पर शोध का लंबा अनुभव, पहेली संचालन के अनुभवी को प्राथमिकता, पहेली विजेताओं को वरीयता
वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

3. प्रविष्ठि सलाहकार (Post Advisor)

कार्यक्षेत्र- नई प्रविष्ठि के विषय सुझाना (दूसरे चिट्ठों को देखकर प्रेरित होने की छूट)
आयुसीमा- कोई सीमा नहीं
अनुभव- चिट्ठा लेखन का अनुभव, कॉपी-पेस्ट में महारथियों को प्राथमिकता
वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

4. चिट्ठा भ्रमणकर्ता (Blog Visitor)

कार्यक्षेत्र- सभी हिन्दी चिट्ठों पर दैनिक भ्रमण, हर नए तथ्य को प्रबंधन तक पहुंचाना
आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (छह गुणा छह आंखों वाले अभ्यर्थियों को प्राथमिकता)
अनुभव- निर्बाध ब्लॉग पठन का लंबा अनुभव अनिवार्य, हिन्दी संकलकों की समझ वांछनीय
वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

5. विवाद अन्वेषक (Controversy Explorer)

कार्यक्षेत्र- चिट्ठा संसार में चलने वाले हर विवाद की पड़ताल और तदनुरूप किसी भी हाल में उसमें पड़ने की संभावना का पता लगाना
आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (महिलाओं को प्राथमिकता)
अनुभव- हंगामा और विवाद मचाने का अनुभव वांछनीय, चिट्ठा संसार में लोकप्रियता अनिवार्य
वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

6. आशुकवि (Spontaneous Poet)

कार्यक्षेत्र- किसी प्रविष्ठि के लिए या टिप्पणी पर आशुकविता की रचना, लेखन का अन्य विषय नहीं मिलने पर तुरंत कविता हाजिर करने का दायित्व

आयुसीमा- कोई सीमा नहीं

अनुभव- तुकबंदी में माहिर और चिट्ठों पर कविताएं पढ़ने का लंबा अनुभव

वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

7. चिट्ठासंपर्क अधिकारी (Blog Relations Officer)

कार्यक्षेत्र- चिट्ठा लेखकों और पाठकों के साथ सौहार्द्रपूर्ण और सुमधुर संबंधों का निर्माण

आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (महिलाओं को प्राथमिकता)

अनुभव- इस पद के लिए वह चिट्ठाकार सर्वाधिक उपयुक्त है, जिसके ब्लॉग पर सबसे ज्यादा टिप्पणियां आती हैं।

वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

8. चिट्ठा गोठ/कार्यक्रम प्रबंधक (Meet/Event Manager)

कार्यक्षेत्र- चिट्ठा गोष्ठी (ब्लॉगर मीट) का आयोजन और प्रबंधन, ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को जुटाने का दायित्व

आयुसीमा- कोई सीमा नहीं

अनुभव- चिट्ठा गोठ करा चुके अभ्यर्थी को प्राथमिकता, सामूहिक चिट्ठों के लेखकों को वरीयता

वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

9. लेखा प्रबंधक (Accounts Manager)

कार्यक्षेत्र- ठाले बैठने का काम, भविष्य में (4-5 साल बाद) कमाई हुई तो वित्त देखने की जिम्मेदारी, फिलहाल प्रविष्ठियों और टिप्पणियों का हिसाब किताब और उनकी दूसरे चिट्ठों के साथ तुलना

आयुसीमा- कोई सीमा नहीं (युवक-युवतियों को प्राथमिकता)

अनुभव- नए चिट्ठाकारों के लिए उपयुक्त

वेतन- चिट्ठाउद्योग में सर्वाधिक

10. चिट्ठा मुखबिर (खबरिया) (Blog Intelligence Officer)

कार्यक्षेत्र- नामचीन चिट्ठाकारों के पल-पल की खबर जुटाना, कहां टिप्पणी कर रहे हैं, किसके साथ फोन पर बात कर रहे हैं, भविष्य में कौनसी पोस्ट कर रहे हैं, परदे के पीछे क्या चल रहा है आदि

आयुसीमा- कोई सीमा नहीं

अनुभव- हिन्दी ब्लॉग जगत में लंबा अनुभव, चिट्ठाकारों के बीच अच्छी पैठ, स्पष्ट छवि।

वेतन- योग्यतानुसार

आवेदन करने की कोई अंतिम तिथि निर्धारित नहीं की गई है।

आशीष खण्डेलवाल

हिन्दी ब्लॉग टिप्स : http://tips-hindi.blogspot.com/

"हाय" - कहती सुख को बाय

पहले मनवा सोच ले,
फ़िर मुख से कछु बोल /
निज पर डारि के देखि ले,
मन के तराजू तोल //

जो बात कहे औरन के लिए,
ये बात क्या तुझको भाय ?
फ़िर तू क्यूँ बोले, पर दुःख तोले,
लेता है क्यों हाय ?

जो बात किसी के मन को दुखे,
और आंत-आंत जल जाय /
दुःख भरे मन से जलती आंत से,
हरदम निकले हाय //

बुरी बात दिल ऐसे लागे,
जैसे आग कोई जल जाय /
जलते हैं जैसे भानु-कृशानु,
दावानल लग जाय //

बुरी बात से मन औ आसमां,
क्षत-विक्षत हो जाय /
तन को डॉक्टर जोड़ सके पर
मन कोई जोड़ ना पाय //

कहके ना सोचो, सोच के बोलो,
मत लो किसी की हाय /
बाय-बाय कर सुख को भगाता,
इतनी बुरी है हाय //

हाय से भारी पत्थर फूटे,
हाय से मिलती पीर /
सुख से दुःख की ओर तू जाता,
पलटाए तकदीर //

दुश्मन से तू भाग सके है,
'हाय' से कैसे भागे ?
आत्म-सरीखी सूक्ष्म है 'हाय',
चलती है तेरे आगे //

सुने भागवत, रामकथा और
दिया न थोड़ा ध्यान /
कर्म में न आया-मन ना समाया,
रह गया कोरा ज्ञान //

निगमागम सब शास्त्र बताए,
कहते वेद पुराण /
कहे भागवत तुलसी रामायण,
गीता और कुरान //

सबने यही एक बात बताई,
एक बताया सार /
सुख देकर के दुःख को ले लो,
दुःख से दुःख का भार //

शोभा सारड़ा
www.shobhapoem.blogspot.com

बीबी साथ में फिर कैसा

आज शाम भर सोचता रहा कि किस रस में रचना लिखूँ. विचार कई उठे और खारिज होते गये. अधिकतर क्या लगभग सभी का कारण था कि बीबी साथ में है.

देखिये, सोचा विरह गीत लिखूँ मगर कैसे-बीबी साथ में है फिर कैसा विरह और किसका विरह. अतः खारिज.

फिर विचार बना कि वीर रस-मगर फिर वही, बीबी साथ में है तो काहे के वीर. बीबी के सामने तो अच्छे अच्छे पीर तक वीर नहीं हो पाये तो हम क्या होंगे. अतः खारिज.

अब सोचा, प्रेम गीत-मगर बीबी साथ में है. मियां बीबी मे प्रेम तो एक अनुभुति है, एक दिव्य अहसास है, एक साझा है-प्रेम तो इसका एक अंग है और एक अंग पर क्या लिखना. लिखो तो संपूर्ण लिखो वरना खारिज. अतः खारिज.

फिर रहा श्रृंगार रस तो बीबी साथ में है और वो चमेली का तेल लगाती नहीं फिर कैसे होगा पूर्ण श्रृंगार. अपूर्ण पर क्या रचूँ. अतः यह भी खारिज.

बच रहा हास्य रस- तो बीबी साथ हो या न हो. मगर यहाँ ब्लॉग पर हंसना मना है. यह हा हा ठी ठी ठीक नहीं वो भी जब बीबी साथ में हो तो गंभीर रहने की सलाह है. अतः खारिज.

अब क्या करुँ. कई विचारों के बाद नये रस 'टेंशन रस' की रचना बन पाई यानि किसी भी चीज से बेवजह परेशान. ऐसा होगा तो फिर क्या होगा. वैसा होगा तो फिर क्या होगा. इस तरह की फोकट टेंशन में जीने वाले बहुत से हैं. इस तरह जीना भी एक कला ही कहलाई और जो जिये, वो कलाकार. तो ऐसे सभी कलकारों को प्रणाम करते हुए सादर समर्पित:

चाँद गर रुसवा हो जाये तो फिर क्या होगा
रात थक कर सो जाये तो फिर क्या होगा|

यूँ मैं लबों पर, मुस्कान लिए फिरता हूँ
आँख ही मेरी रो जाये तो फिर क्या होगा|

यों तो मिल कर रहता हूँ सबके साथ में
नफरत अगर कोई बो जाये तो फिर क्या होगा|

कहने मैं निकला हूँ हाल ए दिल अपना
अल्फाज़ कहीं खो जाये तो फिर क्या होगा|

किस्मत की लकीरें हैं हाथों में जो अपने
आंसू उन्हें धो जाये तो फिर क्या होगा|

बहुत अरमां से बनाया था आशियां अपना
बंट टुकड़े में दो जाये तो फिर क्या होगा|

ये उड़ के चला तो है घर जाने को 'समीर'
हवा ये पश्चिम को जाये तो फिर क्या होगा|

समीर लाल

http://udantashtari.blogspot.com

ज़िन्दगी क्या जंग से कम है - लघुकथा

उसकी मां आई.सी.यू में भर्ती थी। वह और उसका चाचा बाहर टहल रहे थे। उसने चाचा से पूछा-'चाचाजी, आपको क्या लगता है कि पाकिस्तान से भारत की जंग होगी।'

चाचा ने कहा-'पता नहीं! अभी तो हम दोनों यह जंग लड़ ही रहे हैं।'

इतने में नर्स बाहर आयी और बोली-'तीन नंबर के मरीज को देखने वाले आप ही लोग हैं न! जाकर यह दवायें ले आईये।'

युवक ने पूछा-"आप ने अंदर कोई दवाई दी है क्या?'

नर्स ने कहा-' नहीं! अभी तो चेकअप कर रहे हैं। उनके कुछ और चेकअप होने हैं जो आप जाकर बाहर करायें। हमारी मशीनें खराब पड़ीं हैं। अभी यह दवायें आप ले आयें।

लड़का दवा लेने चला गया। रास्ते में एक फलों का ठेला देखा और अपनी मां के लिये पपीता खरीदने के लिये वहां रुक गया। उसी समय दो लड़के वहां आये और उस ठेले से कुछ सेव उठाकर चलते बने।

ठेले वाला चिल्लाया-'अरे, पैसे तो देते जाओ।'

उन लड़कों में एक लड़के ने कहा-'अबे ओए, तू हमें जानता नहीं। अभी हाल जाकर ढेर सारे दोस्त ले आयेंगे तो पूरा ठेला लूट लेंगे।'

ठेले वाले ने कहा-'ढंग से बात करो। मैं भी पढ़ा लिखा हूं। इधर आकर पैसे दो।'

उनमें एक लड़का आया और उसके गाल पर थप्पड़ जड़ दिया। वह ठेले वाला सकते में आया और लड़के वहां से चलते बने।'

ठेले वाला गालियां देता रहा। फिर पपीता तौलकर उस युवक से बोला-'साहब, क्या लड़ेगा यह देश किसी से। आतंक आतंक की बात करते हैं तो पर यह घर का आतंक कौन खत्म करेगा? गरीब और कमजोर आदमी का इज्जत से जीना मुश्किल हो गया है और बात करते हैं कि बाहर से आतंक आ रहा है।

वह दवायें लेकर वापस लौटा। उसने अपनी दवायें नर्स को दी। वह अंदर चली गयी तो उसने अपने चाचा को बताया कि एक हजार की दवायें आयीं हैं। उसने चाचा से कहा-'चाचाजी, यहां आते आते पंद्रह सौ रुपये खर्च हो गये हैं। अगर कुछ पैसे जरूरत पड़ी तो आप दे देंगे न! बाद में मैं आपको दे दूंगा।'

चाचा ने हंसकर कहा-'अगर मुझे मूंह फेरना होता तो यहां खड़ा ही क्यों रहता? तुम चाहो तो अभी पैसे ले लो। बाद में देना। तुम्हारी मां ने मुझे देवर नहीं बेटे की तरह पाला है। उसकी मेरे ऊपर भी उतनी ही जिम्मेदारी है जितनी तुम्हारी।'

इतने में वही नर्स वहां आयी और एक पर्चा उसके हाथ में थमाते हुए बोली-'डाक्टर साहब बोल रहे हैं यह इंजेक्शन जल्दी ले आओ।'

युवक वह इंजेक्शन ले आया और फिर चाचा से बोला-'मेडीकल वाले में बताया कि यह इंजेक्शन तो अक्सर मरीजों को लगता है। वह यह भी बता रहा था कि इन अस्पताल वालों को ऐसे ही इंजेक्शन मिलते हैं पर यह कभी मरीज को नहीं लगाते बल्कि बाजार में बेचकर पैसा बचाते हैं।'

चाचा ने कहा-'हां, यह तो आम बात है। सार्वजनिक अस्पताल तो अब नाम को रह गये हैं। वह दवाईयां क्या डाक्टर ही देखने वाला मिल जाये वही बहुत है।'

वह कम से कम तीन बार दवाईयां ले आया। धीरे धीरे उसकी मां ठीक होती गयी। एक दिन उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। बाद में वह युवक बाजार में अपने सड़क पर

सामान बेचने के ठिकाने पर पहुंचा। उसने अभी अपना सामान लगाया ही था कि हफ्ता लेने वाला आ गया। युवक ने उससे कहा-'यार, मां की तबियत खराब थी। कल ही उनको आई.सी.यू. से वापस ले आया। तुम कल आकर अपना पैसा ले जाना।'

हफ्ता वसूलने वाले ने कहा-'ओए, हमारा तेरी समस्या से कोई मतलब नहीं है। हम कोई उधार नहीं वसूल नहीं कर रहे। हमारी वजह से तो तू यहां यह अपनी गुमटी लगा पाता है।'

युवक ने हंसकर कहा-'भाई, जमीन तो सरकारी है।'

हफ्ता वसूलने वाले ने कहा-'फिर दिखाऊं कि कैसे यह जमीन सरकारी है।'

युवक ने कहा-'अच्छा बाद में ले जाना। कम से कम इतना तो लिहाज करो कि मैंने अपनी मां की सेवा की और इस कारण यहां मेरी कमाई चली गयी।'

हफ्ता वसूली करने वाले ने कहा-'इससे हमें क्या? हमें तो बस अपने पैसे से काम है? ठीक है मैं कल आऊंगा। याद रखना हमें पैसे से मतलब हैं तेरी समस्या से नहीं। '

वह हफ्तावसूली वाला मुड़ा तो उसी समय एक जूलूस आ रहा था। जुलूस में लोग देश भक्ति जाग्रत करने के लिये आतंक विरोधी तख्तियां लिये हुए थे। उसमें उसे वह दो लड़के भी दिखाई दिये जिन्होंने फल वाले के सेव लूटकर उसको थप्पड़ भी मारी थी। उन्होंने हफ्ता वसूल करने वाले को देखा तो बाहर निकल आये और उससे हाथ मिलाया।'

उसके निकलने पर युवक के पास गुमटी लगाने वाले दूसरे युवक ने कहा-'यार, तेरे को क्या लगता है जंग होगी?'

पहले युवक ने आसमान की तरफ देखा और कहा-'अभी हम लोगों के लिये यह जिंदगी क्या जंग से कम है?'

दीपक राज कुकरेजा 'भारतदीप'

दीपक भारतदीप की ई-पत्रिका-

http://dpkraj.wordpress.com/

गिनती ज़िन्दगी की

बच्चे थे तो टॉफियाँ गिना करते थे,
थोड़े बड़े हुए तो दोस्त गिना करते थे,

स्कूल पहुंचे तो हाथों पर छड़ियाँ गिना करते थे,
कॉलेज आए तो मार्क्स गिना करते थे,

थोड़े और बड़े हुए तो गर्ल-फ्रेंड्स गिना करते थे,
नौकरी लगी तो तरक्कियां गिना करते थे,

शादी हुई तो बच्चे गिना करते थे,
फैक्ट्री लगाई तो रूपए गिना करते थे,

दादा बने तो पोते गिना करते थे,
आज जा रहे हैं इस दुनिया से

और साँसे गिनने की घड़ी आ गई है..
सोच रहा है क्या सिर्फ़ गिनते गिनते ही ज़िन्दगी निकाल दी ?
काश कभी इन उँगलियों पर उसका नाम भी गिना होता
जिसने यह गिनती बनाई है,

अब क्या फायदा ?
क्या फायदा अब सोचने से ?
साँसों का दामन तो छूट रहा है ....
और साथ-साथ दो आंसुओं की कीमत भी गिन रहा हैं...

प्रतीक माहेश्वरी

www.bitspratik.blogspot.com

घासीराम मास्साब की ज़िन्दगी का एक दिन

आज नल आने का दिन है....घासीराम मास्साब की कसरत का दिन | पूरी टंकी भरने के लिए डेढ़ सौ बाल्टी भरकर ऊपर दूसरी मंजिल पर लाना कोई जिम जाने से कम है क्या ? हाँ...ये अलग बात है की इस कसरत से घासीराम मास्साब के दाहिने हाथ की मसल तो सौलिड बन गयी पर बायाँ हाथ बेचारा मरघिल्ला सा ही है | सो अब मास्साब फुल बांह की बुशर्ट ही पहनते हैं | पांच बजे से बाल्टी चढ़ानी शुरू की...अब जाके साढ़े छै बजे टंकी भरी | इस नल के चक्कर में मास्साब मंजन कुल्ला भी न कर पाए....ऊपर से मास्टरनी की चें चें...मास्साब को कितने दिन हो गए पानी भरते-भरते पर आज तक सीढियों पर पानी गिराए बिना बाल्टी ऊपर चढ़ाना न सीख पाए | मास्टरनी को भोर की बेला में भड़कने में महारत हासिल है | सूरज की किरणें, ओस की बूँदें, तितली, वगैरह-वगैरह .. सुबह को आनंददायक बनाने वाले सारे आइटम मिलकर भी मास्टरनी की सुबह को कभी सुहानी न बना पाए | मास्टरनी के चिड़चिड़े स्वभाव से खुशियों को धराशायी होते दो पल नहीं लगते | खैर..मास्साब को सात बजे स्कूल जाना है सो मास्टरनी की चें चें पें पें को दर किनार करते हुए जल्दी जल्दी मंजन करा और चाय गटक कर निकल पड़े स्कूल की और|स्कूल पहुँचते ही मास्साब जल्दी जल्दी लपके मैदान की ओर जहां प्रार्थना प्रारंभ हो चुकी है... मास्साब ने अपने गंजे सर के आजू बाजू के बाल संवारे और हैड मास्टर के बगल में खड़े हो गए.... हैड मास्टर ने घूरा की लेट काहे आये हो ? मास्साब ने समझ कर दीन हीन सा मुंह बनाया और हाथ से बाल्टी पकड़ने का इशारा किया| हैड मास्टर ने मुंह बिचका दिया कि ठीक है | घासीराम मास्साब पूरे वॉल्यूम में प्रार्थना गा रहे हैं.... "हे शारदे माँ.... हे शारदे माँ" हैड मास्टर ने पुनः घूरा कि गला जरा कम फाड़ो | मास्साब ने टप्प से मुंह बंद कर लिया | सिर्फ होंठ हिलते रहे | प्रार्थना ख़तम हुई....बच्चे लाइन बनाकर कक्षाओं की ओर चल पड़े | दस कदम तक लाइन चली फिर चिल्ल पों करते झुंड ही झुंड नजर आने लगे | अब किसी मास्टर के बाप के बस की नहीं है की इन होनहारों की लाइन दुबारा बनवा दे |

...किताब खोलते हैं फिर बंद कर देते हैं.... इत्ता आलस आ रहा है की मन ही नहीं कर रहा पढाने का ! जम्हाई पे जम्हाई...अंत में मास्साब आगे बैठे बच्चे से कहते हैं....

आहा..क्या सुहाना दृश्य है कक्षा का | घासीराम मास्साब कुर्सी पर बिराज चुके हैं | छात्र-छात्राएं भी आकर टाट पट्टियों पर अपना स्थान ग्रहण कर चुके हैं | मास्साब ने जम्हाई लेते हुए बच्चों को पंद्रह मिनिट का समय दिया है ताकि सब अपनी अपनी जगह पर बैठ जाएँ | "गोपाल...." मास्साब ने आवाज लगायी | गोपाल कक्षा का मॉनिटर है... आवाज़ सुनते ही हाजिरी का रजिस्टर लेकर खड़ा हो गया और मास्साब की तरफ से हाजिरी लेने लग गया | हाजिरी लेने भर से गोपाल अपने आप को आधा मास्टर समझता है.... और घासीराम मास्साब का आधा काम कम हो जाता है | दोनों प्राणी खुश.. हाजिरी के बाद मास्साब ने घड़ी देखी | साला अभी भी आधा घंटा बाकी है | मास्साब बार-बार सहायक वाचन की किताब खोलते हैं फिर बंद कर देते हैं.... इत्ता आलस आ रहा है कि मन ही नहीं कर रहा पढ़ाने का | जम्हाई पे जम्हाई... अंत में मास्साब आगे बैठे बच्चे से कहते हैं...."चलो पढ़ना शुरू करो जोर-जोर से और जैसे ही दस लाइनें पढ़ लो अपने पीछे वाले को दे देना... मुझे कहना न पड़े |" लो जी.... मास्साब ने ऑटो मोड में डाल दिया कक्षा को | अब झंझट ख़तम... आधे घंटे तक बच्चे ही बक बक करते रहेंगे | मास्साब ने चश्मा पहन

लिया... एक आध झपकी आ भी गयी तो अब सारा इंतजाम हो चुका है |

आगे बैठे खुशीराम ने पढ़ना शुरू किया "एक थी चुरकी... एक थी मुरकी....|" ख़ुशी राम पढ़ रहा है | उसके पीछे बैठा गोपाल अपनी बारी के इंतज़ार में ठुड्डी पर हाथ धरे बैठा है | बाकी क्लास क्या करे....? कमला सरिता की चोटी खोलकर फिर से गूँथ रही है | कलुआ बोर हो रहा है सो सबसे पीछे बैठे-बैठे टाट पट्टी को ही चीथे जा रहा है | कलुआ ने बोर हो हो के टाट पट्टी आधी कर दी है क्लास के पीछे कोने में टाट पट्टी की सुतलियों का ढेर लगा है | ढेर भी बड़े काम की चीज़ है.... उस पर मजे से बैठा स्कूल का पालतू कुत्ता कचरू चुरकी मुरकी की कहानी सुन रहा है... संभवतः वही एकमात्र श्रोता है जो पढ़ने वाले की मेहनत को सफल बना रहा है |

निशाना साधकर फेंकी जगन पर...जगन ने सर दायीं तरफ झुका लिया ! चौक जाकर पड़ी उषा की नाक पर ! उषा तिलमिला गयी

प्रताप बुद्धू सरीखा मास्साब को एकटक देखे जा रहा है....जाने पी.एच.डी. ही कर मारेगा क्या ? उसकी आँख मास्साब पर से नहीं हटती है | अचानक वो बगल वाले बजरंग से कहता है... "देखना अब सर लुढ़केगा मास्साब का |" बजरंग जैसे ही मास्साब को देखता है... दन्न से मास्साब का सर कंधे पर लुढ़क जाता है | सारी कक्षा जोर से हंसती है | मास्साब चौंक कर जाग गए हैं और गुस्से में हैं..."ए प्रताप तू ज्यादा पुटुर पुटुर मत किया कर | पढ़ने लिखने में नानी मरती है तेरी....चल खड़ा हो जा " प्रताप बिना देर किये खड़ा हो गया है | बजरंग उसके पैर में चिकोटी काटता है | मास्साब अभी जगे हुए हैं और क्रोधित भी हैं.....एक चौक का टुकड़ा उठाकर मारते हैं बजरंग के सर पर | बजरंग के सर पर चौक पट्ट से पड़ी | अब मास्साब अपनी सारी चौक ख़तम करेंगे....उन्होंने कई टुकड़े करके रख लिए हैं | जगन पढ़ रहा है...." चुरकी ने मुरकी से कहा....."अबे, अभी तक ख़तम नहीं हुई तेरी चुरकी मुरकी |" हो गयी...मास्साब तीसरी बार चल रही है | जगन खी-खी कर दिया | मास्साब की चौक तैयार थी..... निशाना साधकर फेंकी जगन पर.... जगन ने सर दायीं तरफ झुका लिया | चौक जाकर पड़ी उषा की नाक पर | उषा तिलमिला गयी.... यूं भी सबसे लड़ाकू लड़की ठहरी क्लास की | भें भें करके रोना शुरू कर दिया | अब मास्साब घबराए | सिटपिटाते हुए बिटिया बिटिया करते पहुंचे उषा के पास |" मैं आपकी शिकायत अपने पापा से करुँगी.... देख लेना | मेरे को कित्ती लग गयी |" उषा को बड़े दिनों बाद मौका मिला था मास्टर से उलझने का | वैसे भी क्लास के बच्चों के साथ लड़ लड़के उकता गयी थी | मास्साब पूरे जतन से उषा को मनाने में जुट गए हैं... अभी उषा के पिताजी आयेंगे | पूरा स्कूल सर पर उठा लेंगे | उषा का लड़ाकू स्वभाव उसके पिता से ही उसमें ट्रांसफर हुआ है | मास्साब को पसीना आ गया उषा को मनाते मनाते पर उषा सुबक-सुबक के ढेर करे दे रही है | मास्साब उषा के आंसू पोछते हैं... वहाँ तक तो ठीक है पर अब नाक भी पोंछनी पड़ रही है | उषा भी रो-रो के अब बोर हुई | आंसुओं की आखिरी खेप जैसे ही पूरी हुई...उषा के मुंह से निकला "एक तो अगले हफ्ते तिमाही परीक्षा है .. उसकी तैयारी भी नहीं कर पायी थी ऊपर से आपने मेरी नाक में दे दी | अब मैं क्या करुँगी ?" मास्साब बिना एक भी क्षण की देरी किये बोले "अरे... बिटिया तू क्यों चिंता करती है परीक्षाओं की | मैं सब देख लूँगा तू तो मजे से रह |" उषा रानी अन्दर से भारी प्रसन्न हुई पर प्रत्यक्ष में ऐसा मुंह बनाया मानो मास्साब पे एहसान पेल रही हों पढ़ाई न करके | चलो अंततः उषा प्रकरण समाप्त होता है |

मास्साब फिर से कुर्सी पर बैठकर घड़ी देखने लग गए हैं | अब वो प्रतीक्षित क्षण आ गया है जिसका बच्चों और मास्साब दोनों को इंतज़ार था | आखिर घंटी बज गयी....एक पीरियड ख़तम हुआ | बच्चे एक दूसरे के ऊपर चौक और कागज़ वगेरह फेंक फेंक कर ऊधम करने में लग गए हैं | मास्साब दूसरा पीरियड लेने के पहले अध्यापक कक्ष में जाकर थोड़ा सुस्ता रहे हैं | पढ़ा पढ़ाकर मास्साब का सिर दुःख गया है | इसी प्रकार मास्साब ने कड़ी मेहनत से पढ़ाकर और सुस्ता कर दिन निकाल दिया है |

चलो... एक दिन की तनखा पक गयी....कहते हुए छुट्टी के बाद मास्साब घर पहुँच गए हैं | घर पर सब्जी का थैला बेताबी से मास्साब का इंतज़ार कर रहा है | मास्साब को घर पर गुस्सा होने या खीजने की सुविधा प्राप्त नहीं है | लगभग रिरियाते हुए मास्टरनी से बोले "अरे...जरा सांस तो ले लेने दो | थोड़ा फ्रेश तो हो लूं |" मास्टरनी गुर्राई "सब्जी लाने में तुम्हारी सांस रुक जायेगी क्या? और..ये फ्रेश व्रेश तुम स्कूल से ही होकर क्यों नहीं आते हो ? अब देर न करो और जाओ...." मास्साब आदेश के पालन में चल पड़े सब्जी लाने | सब्जी लाकर रखी | मास्टरनी द्वारा बताये गए अन्य घरेलू कार्यों को भी कुशलता से पूर्ण करने के बाद स्कूल के बच्चे ट्यूशन पढ़ने आ गए | यही एक घंटा ऐसा था जब मास्साब को घर के कामों से मुक्ति मिलती थी...अरे इसलिए नहीं कि मास्साब पढ़ाने में व्यस्त हो जाते थे | बल्कि चंदू, प्रकाश, मनोहर, दीन दयाल आदि बच्चे मास्साब के हिस्से का कार्य ख़ुशी ख़ुशी कर देते थे | उन्हें कौन सा पढ़ने में भारी रस आता था | घर की छत धोकर, मास्साब की लड़कियों के लिए बाज़ार से मैचिंग की बिंदी चूड़ी लाकर, मास्टरनी का धनिया साफ़ करके ही उन्हें परीक्षा में संतोषप्रद नंबर मिल जाते हैं | अच्छे नंबरों के लिए किताबों में सर खपाने की कोई ज़रुरत नहीं पड़ती |

शाम के वक्त मास्टरनी भजन मण्डली के सक्रिय सदस्या के रूप में मंदिर जाती हैं...जहां सक्रियता से अच्छे स्वास्थ्य हेतु निंदा रस का सेवन किया जाता है | इस खाली समय का उपयोग मास्साब आराम फरमाने में करते हैं | आज मास्साब रात की नींद भी अच्छी प्रकार से लेंगे क्योंकि कल नल नहीं आएगा | मास्साब के चार बच्चे हैं...जिनमें सबसे छोटा पिंटू चार साल का है और पूरे समय मास्साब की गोद में लटका रहता है | बाकी बड़े बड़े हैं...मास्साब की उन्हें कोई ज़रुरत नहीं है | इसी एक घंटे में मास्साब टी.वी. पर समाचार देख लेते हैं | मास्टरनी के आने के बाद सीरियलों का अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाता है | खैर मास्साब की जिंदगी का कोई भी दिन उठाएंगे तो बिना किसी परिवर्तन के सेम टू सेम यही दिनचर्या देखने को मिलेगी | फर्क केवल इतना है की जिस दिन नल नहीं आएगा मास्साब को सुबह में एक घंटा और सोने को मिलेगा |

नोट- ये कहानी पूरी तरह वास्तविक घटनाओं पर आधारित है | कुछ जीवित व्यक्तिओं से इसका गहरा सम्बन्ध है | वास्तविक पात्र भी पढ़कर पूरा आनंद ले सकें, इस प्रयोजन से पात्रों के नाम परिवर्तित कर दिए गए हैं |

पल्लवी त्रिवेदी

http://kuchehsaas.blogspot.com/

10 पॉइन्टर

कल रात मेरे एक दोस्त से मुलाकात हुई,
मुलाकात तो बाद में पहले आँखें 2-4 हुई,
अन्दर की ओर धंसी हुई आँखों में अँधेरा नज़र आ रहा था,
हड्डियों का ढांचा बदन को चीर के बाहर आ रहा था,
मैंने पूछा, ऐ दोस्त कहाँ गुम हो गए हैं तेरे होश,
तू तो बिट्स का 10 पॉइंटर हुआ करता था,
प्रोफ्स बाद में पूछते थे, पहले तू बतलाता था,
L.T.C. में तेरी प्रश्नों की गूँज गूंजती थी,
बैच की सभी लड़कियां तेरे आगे-पीछे घूमती थी,
फिर आज तेरा चेहरा क्यों मलिन नज़र आ रहा है,
सूर्य जहाँ उदय होता था आज वहां अस्त हो रहा है,
मेरे इन प्रश्नों को सुन वह थोड़ा व्याकुल हुआ,
पर बड़ी हिम्मत बटोरकर वह कुछ बोलने के काबिल हुआ,
वह बोला .....
दोस्त इस दस पॉइंटर के घमंड ने ही मुझे,
इस अवस्था में ला दिया है,
मुझे एक हीरो से जीरो बना दिया है,
10 पॉइंटर के इस घमंड ने, मुझे मेरे दोस्तों से,
दूर किया है,
ज़िन्दगी के इस सफ़र में तनहा कर दिया है,
समय के साथ मेरा घमंड बढ़ता गया,
मुझे अपनों से दूर करता गया,
पर मेरे बुरे समय में, मैं अकेला पड़ गया,
दस पॉइंटर के इस घमंड ने मुझे बर्बाद कर दिया,
मेरा ये सन्देश तुम जूनियर को पहुंचा देना,
इस घमंड को उन को ना अपनाने देना,
ज़िन्दगी में सफलता पाना कोई बुरी बात नहीं,
पर उस सफलता के घमंड में खुद को डुबा लेना नहीं .....

कुणाल सूरज

पुकार

व्योम भी गरजता है, परमाणु के सिंहनाद से ..
भीरु बच सका है क्या कभी अंतर्नाद से !

चिंगारियां उठती हैं जब नसों में हो रक्त सी ..
तीन लोक काँपते हैं थम जाता है वक्त सा ..

दिशायें रहम की भिक्षुक बन मार्ग बदलने लगती हैं ..
जब विजय का स्वप्न लिए कहीं दो अक्षि जगती हैं ..

कायरों के लिए नहीं है धरा का ये रण विज्ञान ...
लोरी नहीं बजती यहाँ चीत्कार लेती है प्राण ...

इसमें है कूदना तो पहले तनिक थम कर सोच लो ...
डर का चील बैठा कहीं तो उतर उसको नोच लो ...

भावनाओं की मधुर कली, है नहीं खिलती यहाँ ...
न क्षमा कर पाओगे , न क्षमा मिलती यहाँ ...

फ़िर अगर गये हैं प्राण रण में तो कोई चिंता नही ..
वीर हो तुम वीर से शौर्य कभी चिंता नहीं ...

तू ही वो वीर है जो ये कर्म युद्ध जीतेगा ..
तेरा एक एक पल सहस्त्रों वसंत सा बीतेगा ...

वैभव रिखाड़ी

कर्मण्येवाधिकारास्ते मा फलेषु कदाचन /
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोस्त्वकर्मणि //

अब लड़ना होगा

आज फ़िर भारत की संप्रुभता पर आंच है आयी ,
इस बार संसद नहीं मुंबई से धमाकों की आवाज है आयी ।

हम विश्व शान्ति के समर्थक हैं ,
क्यूंकि हम गाँधी-नेहरू के वंशज हैं ।
हमने आक्रमण करना नहीं सीखा है ,
सबको गले लगाकर आगे बढ़ना हमारी परम्परा है ।
किंतु क्या हर वक्त अहिंसा का राग अलापना एक कायरता नहीं है ?
मैं कहता हूँ अब प्रश्न तो आत्मरक्षा का है ,
तो फ़िर क्यूँ सेना के हाथों को बाँध रखा है ?
एक बार आरपार का युद्ध करना जरूरी है,
रोज-रोज मासूमों का मरना क्या उनकी मजबूरी है ?

जो शासन अपने जनता की रक्षा भी न कर सकता है ,
हर घटना के वक्त केवल दो आंसू बहा सकता है ,
उसे शासन में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है ,
क्योंकि यह शान्ति समर्थन नहीं, केवल दरबारी कायरता है ।

एक बार दिल्ली अब हिम्मत बांधे,
सीमापार पड़ोसी को चुनौती पकड़ा दे ।
उसे सारे षडयंत्र अब बंद करने होंगे,
नहीं तो घनघोर युद्ध के परिणाम भुगतने होंगे ।
आश्वासनों और कागजी योजनाओं से आत्मरक्षा नहीं होती ,
इसके लिए कभी-कभी जंगें भी हैं लड़नी पड़ती ।
अब यह शान्ति का राग अलापना बंद करना होगा ,
जब तक उग्रवाद का काम तमाम नहीं होगा ,
तब तक अब संघर्ष विराम नहीं होगा ।

अंकित सिंघानिया

वो महात्मा

राज तामस का छाया था,
काली घनेरी रात थी |
लोथड़ों की तलाश में,
भूखे सियारों की टोली थी |
ऐसे बियाबान में, आहट, पदचाप,
टेढ़ी भौहें, सीना गर्विल,
घोर जटाएं, कद लम्बा,
एक छवि उभरी, कुछ धूमिल |
निर्भय हो श्मशान में जा,
लगा बैठा वो अपना आसन,
बिजली कड़की, बादल गरजे,
ना हिला वो अपने स्थान से |
भूत प्रेत सब दास थे उसके,
सर झुका हुकुम बजाते थे,
चारों तरफ उसके एक उजाला,
सीना चीर काली रात का, फैला था |
ऐसा ही एक अघोरी
कभी दिन में चलता था,
छूत-अछूत सब भाई थे उसके,
मानो सब से खून का नाता था |
उसकी एक पुकार, एक चित्कार,
उथल-पुथल का एक आगार,
आज़ादी का घोर निनाद,
हिला गया हर मानस को |

जयंत कुमार

सार्थक मोहंती

प्रेम शंकर

अपूर्व बापट

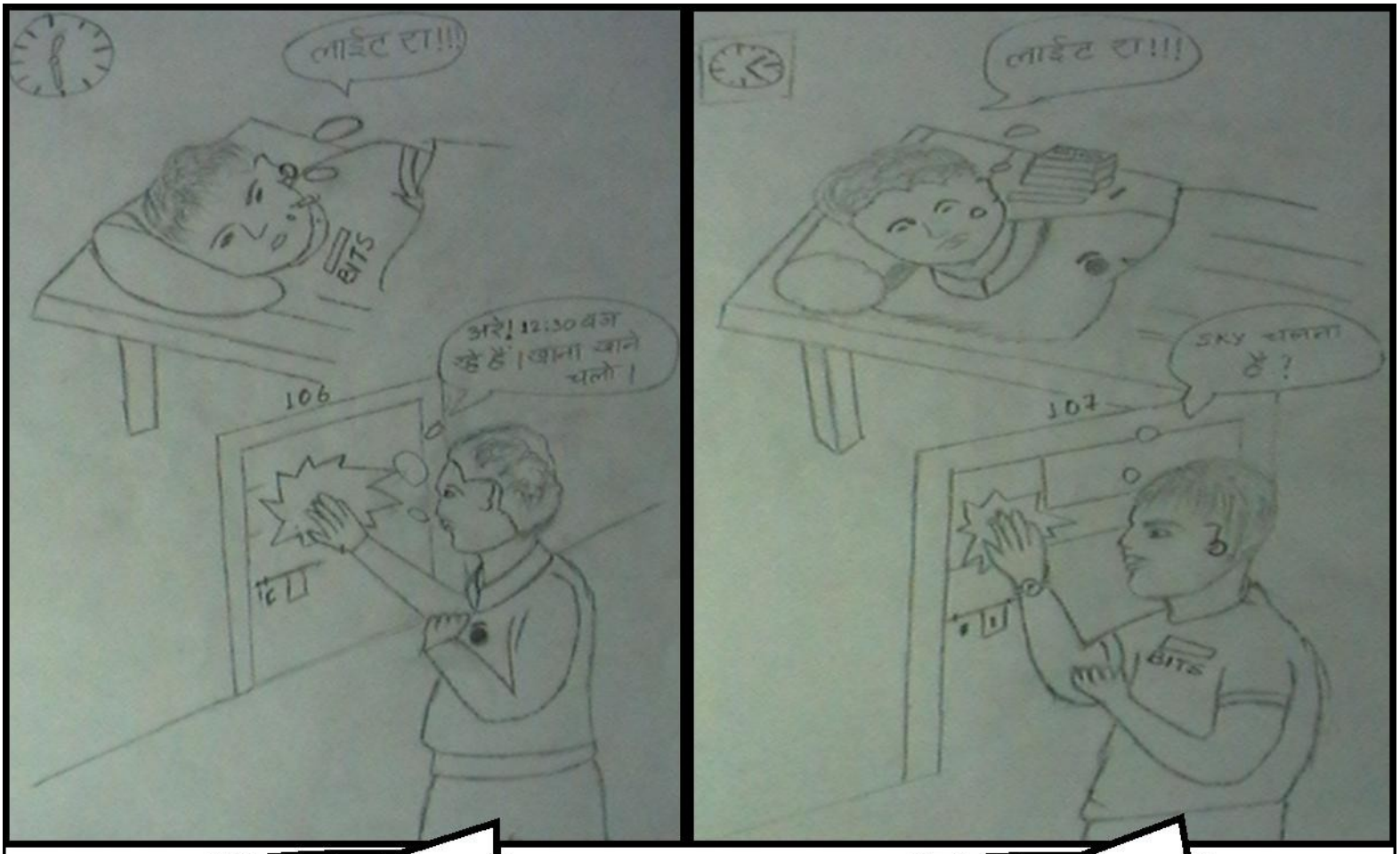

ये है...आम ज़िन्दगी

और ये है..बिट्सियन ज़िन्दगी

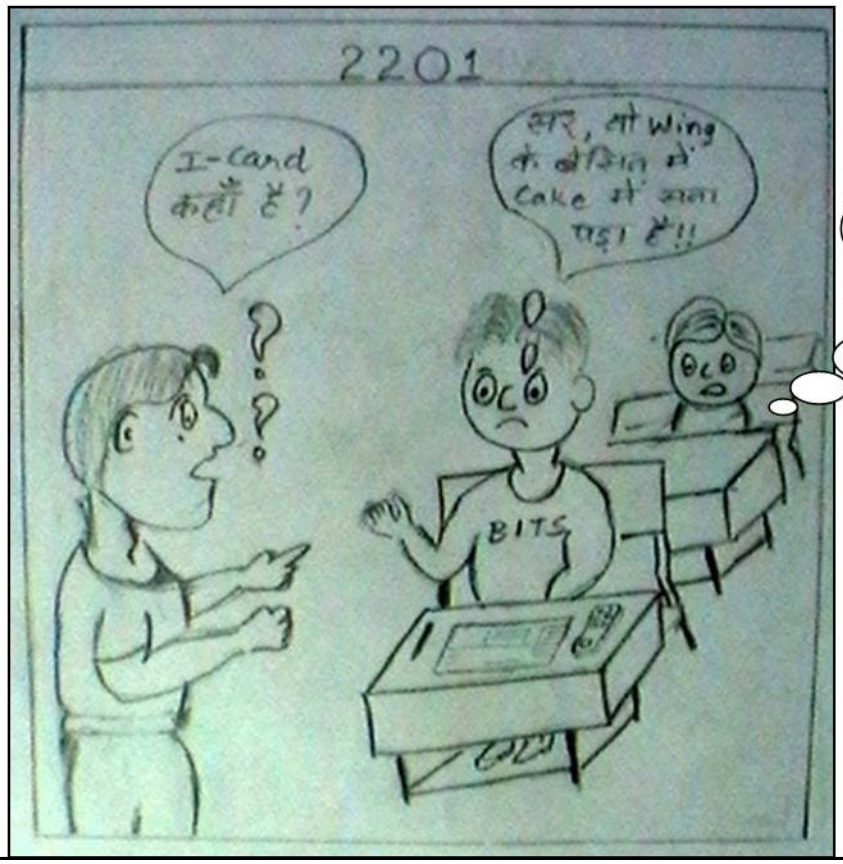

हम नहीं सुधरेंगे !!

प्रेम शंकर

टीम वाणी-२००९

हिना जैन, आलोक सोनी, सुमन तिवारी, प्रतीक माहेश्वरी, निहारिका सिंह, पुष्प सौरभ, सौरभ कश्यप
ऋषिकेश वैद्य, निरुपम आनंद, शैलेश झा, जयंत कुमार, विवेक द्विवेदी, लोकेश राज
ऋत्विक राज, प्रेम शंकर, नित्य कुमार शर्मा, राज शेखर, उज्जवल केजरीवाल

तकनीकी सहयोग - विशाल विवेक

आभार :

प्रो॰ लक्ष्मीकांत माहेश्वरी, प्रो॰ जी रघुरामा, डॉ॰ संगीता शर्मा, संजीव कुमार चौधरी, श्री एन वी मुरलीधर रॉव, ऋषिकेश वैद्य, भावेश नीखरा, डॉ॰ सूर्यकांत महाराणा, श्री संजय कुमार वर्मा, श्री राजीव गुप्ता, श्री आर.के.मित्तल

उदघोषणा :

वाणी एक परिसर पत्रिका है, जो केवल छिप्रवासियों के लिए प्रकाशित की जाती है। इसका किसी भी प्रकार से क्रय विक्रय पूर्णतया अवैध है। दोषी पाये जाने पर उचित कार्यवाही की जायेगी।

वाणी २००९

बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी

©2009 हिंदी प्रेस क्लब, बिट्स पिलानी प्रकाशन